जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 44 संख्याः 21 प्रभात बीकानेर, सोमवार 15 अगस्त, 2022 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 1.20 रू.

"शूबिल", इस अफ्रीकन पक्षी का नाम अगर मॉनस्टर फेस या डैथ पैलिकन होता तो बेहतर होता। इसे पृथ्वी का सबसे ज्यादा डरावना पक्षी भी कहा जा सकता है, जिसके करीब जाने से डर लगता है। अफ्रीका के पूर्वी कटिबंधीय वनों के दलदली भागों में रहने वाला यह पक्षी उन्हीं जीवों का शिकार करता है जो उससे थोड़े छोटे होते हैं। लंगफिश, ईल, कैट फिश जैसी बड़ी मछलियों के साथ-साथ ये पक्षी नाइल मॉनीटर लिज़र्ड, सांप और छोटे मगरमच्छों तक को खा जाते हैं। जी हां, सुनने में आश्चर्यजनक लगता है, किन्तु सत्य है। शिकार करते समय शूबिल मूर्ति की तरह स्थिर खड़े हो जाते हैं और इंतजार करते हैं, जैसे ही कोई लंगफिश या मगरमच्छ का बच्चा पास से गुजरता है ये उसे झपट लेते हैं और अपनी बड़ी सी चोंच से, पानी, घास पात और कीचड़ सहित उसे निगल लेते हैं। उसके बाद अपने बड़े से सिर को आगे-पीछे हिलाते हैं और भोजन के अलावा जो भी फालतू चीजें यह मुंह में चली जाती हैं उन्हें धीरे-धीरे बाहर निकालना शुरु कर देते हैं, जब मुंह में सिर्फ भोजन रह जाता है तब अपनी चोंच के तीखे किनारों से उसके टुकड़े करके निगल लेते हैं। काफी डरावना दृश्य होता है। लेकिन फिर भी इनसे प्रभावित हुए बिना भी नहीं रह सकते। शूबिल लम्बे समय तक पहुत पसंदीदा प्रजाति रहे हैं। प्राचीन मिस्र की कलाकृतियों में इन्हें देखा जाता है। प्राचीन अरब के लोग कथित रूप से इन्हें अबू मरखूब कहते थे जिसका अर्थ है "फादर ऑफ ए स्लिपर"। डैनमार्क के विख्यात लकड़ी के जूतों जैसी नज़र आने वाली अपनी चोंच से ये पक्षी मशीनगन चलने जैसी आवाजें भी निकालते हैं। वैसे तो, अधिकतर समय ये शांत रहते हैं पर घोंसले के आसपास या किसी अन्य पक्षी से मिलते समय अपनी चोंच से पटपट जैसी डरावनी और तेज आवाजें निकालते हैं। इनकी एक और खास बात है कि, ये अपने पैरों पर शौच करते हैं, क्योंकि इससे उन्हें ठंडक मिलती है। शूबिल को, बोत्सवाना व ज़ैम्बिया के दलदली इलाकों में रहने वाले, सैमी अक्वैटिक एन्टिलोप (हिरण), रैड लैचवे का शिकार करते भी देखा गया है। सौ किलो से अधिक वजन वाले पूर्ण विकसित रैड लैचवे परभक्षियों से बचने के लिए पानी का इस्तेमाल करते हैं। तथापि, रैड लैचवे के बच्चे काफी छोटे होते हैं और अक्सर शूबिल का शिकार बन जाते हैं। शूबिल का पाचन तंत्र इतना मजबूत होता है कि ये किसी भी जानवर को खा सकते हैं। अक्सर पूछा जाता है कि, क्या ये भयानक पक्षी इंसानों को भी मार सकते हैं। यह देखते हुए कि, क्रोकोडाइल से युद्ध में उनकी विजय की संभावना होती है, शायद उत्तर "हाँ" हो, लेकिन अभी तक इंसान पर हमले की कोई जानकारी नहीं मिली है। शोधकर्ता इस प्रागैतिहासिक पक्षी और इसके घोसले के 6 फीट करीब तक ही जा पाते हैं। वैसे ये इंसान पर हमला नहीं करते, केवल घूरते हैं लेकिन इनका घूरना भी काफी डरावना होता है।

अमेरिकी सांसदों का प्रतिनिधिमंडल भी ताईवान पहुंचा

अमेरिकी सांसदों के ताइवान दौरे से अब एक बार फिर चीन की आंख दिखाने की रणनीति फेल साबित हुई है

- **ताईवान के एक प्रसारक ने अमेरिकी सरकार के एक विमान के शाम 7 बजे के करीब ताईवान की राजधानी ताइपे में सोंगशान हवाई अड्डे पर उतरने का वीडियो प्रदर्शित किया है।**
- **इस बीच चीन ने चेतावनी देते हुए कहा है कि, बाहरी ताकतों पर निर्भर रहने से ताईवान के अलगाववादियों को कुछ हासिल नहीं होगा और बाहरी ताकतें यह मंसूबा नहीं पालें कि 'ड्रैगन' को नियंत्रित करने के लिए ताइवान को 'बली का बकरा' बनाया जा सकता है।**

ताइपे/नई दिल्ली, 14 अगस्त। नैंसी पेलोसी की की यात्रा के 12 दिन बाद अमेरिकी सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल ताइवान का दौरा कर रहा है। पेलोसी के दौरे पर चीन सख्त आपत्ति जताई थी। इसके बाद भी अमेरिकी सांसद चीन की चेतावनी का दरकिनार करते हुए ताइपे पहुंच गए हैं। पेलोसी के दौरे के जवाब में चीन ने ताइवान के समुद्र और हवाई क्षेत्र के आसपास मिसाइलें दागी थीं और युद्धपोत तथा लड़ाकू विमान भेजे थे। अमेरिकी सांसदों के ताइवान दौरे के बाद अब एक बार फिर चीन की आंख दिखाने की रणनीति फेल साबित हुई है।

ताइवान में अमेरिकन इंस्टीट्यूट ने कहा है कि, पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व मैसाचुसेट्स के डेमोक्रेटिक सांसद एड मार्के कर रहे हैं और एशिया की यात्रा के तहत रविवार और सोमवार को ताइवान में हैं। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य अमेरिका-ताइवान संबंधों, क्षेत्रीय सुरक्षा, व्यापार, निवेश और अन्य मुद्दों पर चर्चा करने के लिए वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात करेंगे। ताइवान के एक प्रसारक ने अमेरिकी सरकार के एक विमान के शाम 7 बजे के करीब ताइवान की राजधानी ताइपे में सोंगशान हवाई अड्डे पर उतरने का वीडियो प्रदर्शित किया।

इस बीच चीन ने चेतावनी देते हुए कहा है कि, बाहरी ताकतों पर निर्भर रहने से ताइवान के अलगाववादियों को कुछ हासिल नहीं होगा और बाहरी ताकतें यह मंसूबा नहीं पालें कि 'ड्रैगन' को नियंत्रित करने के लिए ताइवान को 'बली का बकरा' बनाया जा सकता है।

चीन ने हाल ही में राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय न्याय के मौलिक हितों को बनाए रखने के अपने पक्ष को मजबूती से रखते हुए एक श्वेत पत्र जारी करके यह चेतावनी दी है।

'नये युग में ताइवान प्रश्न और चीन का पुनर्मिलन' शीर्षक से जारी श्वेत पत्र में कहा गया है, देश 'ताइवान स्वतंत्रता' , अलगाववादी ताकतों और बाहरी ताकतों के घिनौने राजनीतिक स्वभाव और भयावह मंशा को गहराई से खारिज करता है और उनके लिए एक कड़ी चेतावनी जारी करता है।

श्वेत पत्र में कहा गया है, चीन के 5,000 साल के इतिहास में, राष्ट्रीय एकीकरण और विभाजन का विरोध पूरे देश का एक सामान्य आदर्श और साझा परंपरा बना हुआ है। ताइवान प्राचीन काल से चीन के क्षेत्र का एक अभिन्न अंग रहा है। चीन से ताइवान अलगाव की बात करना गंभीर अपराध की श्रेणी में आता है, और ताइवान जलडमरूमध्य की दोनों ओर हमवतन के सामान्य हितों और चीनी राष्ट्र के मौलिक हितों को कमजोर करता है। ये रास्ता कहीं भी नहीं जायेगा। ताइवान सभी चीनी लोगों का है, जिसमें ताइवान के 23 लाख हमवतन भी शामिल हैं।

पत्र में यह भी कहा गया है, अलगाववाद ताइवान को रसातल में डूबो देगा और द्वीप के लिए आपदा के अलावा कुछ नहीं लाएगा। यह पूरे चीनी राष्ट्र के हितों को कमजोर करेगा और चीन के लोग कभी इसकी सहमति नहीं देंगे। यहाँ दुनिया में केवल एक चीन है, और ताइवान चीन का हिस्सा है। यह इतिहास और कानून द्वारा समर्थित एक निर्विवाद तथ्य है। ताइवान प्रश्न एक आंतरिक मामला है जिसमें चीन के मूल हित और चीनी लोगों की राष्ट्रीय भावनाएं शामिल हैं, और कोई बाहरी हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

श्वेत पत्र के अनुसार, राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करना प्रत्येक संप्रभु राज्य का पवित्र अधिकार है। चीन शांतिपूर्ण विकास के लिए दढ़ता से प्रतिबद्ध है। साथ ही, यह किसी भी बाहरी हस्तक्षेप के तहत नहीं झुकेगा, और न ही यह अपनी संप्रभुता, सुरक्षा और विकास हितों पर किसी भी उल्लंघन को बर्दाश्त करेगा।

हम सबसे बहुत ईमानदारी के साथ काम करेंगे और शांतिपूर्ण एकीकरण के लिए अपनी पूरी कोशिश करेंगे। लेकिन हम बल प्रयोग का त्याग नहीं करते हैं, और हम सभी आवश्यक उपाय करने का विकल्प सुरक्षित रखते हैं।

'विभाजन की "टू नेशन" थ्योरी भाजपा के सावरकर ने ही दी थी'

छतीसगढ़ में कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा के समापन के मौके पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर बेहद आक्रामक आरोप लगाये

- **मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, टू नेशन थ्योरी का प्रस्ताव सावरकर ने दिया था और इसे मोहम्मद अली जिन्ना ने समर्थन दिया था।**

रायपुर, 14 अगस्त। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर बड़ा हमला बोला है। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, देश के विभाजन के लिए गांधी या नेहरू नहीं बल्कि सावरकर और मोहम्मद अली जिन्ना हैं। छतीसगढ़ में 9 अगस्त से शुरू हुई कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा का समापन रविवार 14 अगस्त को दुर्ग जिले के पाटन में हुआ। इस मौके पर एक सभा में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अपने संबोधन में ये बात कही।

कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा के समापन के मौके पर सीएम भूपेश बघेल ने देश की आजादी के लिए शहादत देने वाले वीर सपूतों को याद किया। इस दौरान कांग्रेस के सभी बड़े नेता और मंत्री मौजूद रहे। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि, टू नेशन थ्योरी का प्रस्ताव सावरकर ने दिया था और इसे मोहम्मद अली जिन्ना ने समर्थन दिया था। बघेल ने आगे कहा कि, ये लोग विभाजनकारी हैं। उन्होंने कहा कि, देश की आजादी की लड़ाई में उनकी क्या भूमिका थी? सीएम बघेल ने कहा कि, आरएसएस का गठन 1925 में हुआ था। ये लोग अभी भी अंग्रेजों की आलोचना नहीं करते, बल्कि वे गांधी की आलोचना करते हैं।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इस आमसभा को संबोधित करते हुए कहा कि, आज के दिन देश का बंटवारा हुआ था। विभाजन के लिए बहुत से लोग महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल को दोषी मानते हैं। बघेल ने कहा, "मैं कहता हूं कि, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संगठन आरएसएस 1925 में बना था। उस समय ये लोग क्या कर रहे थे। जब 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया गया। सभी पहली पंक्ति के नेताओं को जेल में ठूंस दिया गया था। उस समय यही आरएसएस के लोग श्यामा प्रसाद मुखर्जी से लेकर गोलवलकर तक यह सलाह दे रहे थे कि देश की आजादी की इस मुहिम को कैसे कुचला जाए।"

उन्होंने आगे कहा, "ये लोग अंग्रेजों की मुखबिरी करने का काम करते थे। आज यदि देश का बंटवारा हुआ है तो इसके लिए सही मायने में सावरकर जिम्मेदार है। 1925 में सावरकर ने हिंदू महासभा में बोलते हुए कहा कि, इस देश के दो राष्ट्र बनने चाहिए। यही भाषा मोहम्मद अली जिन्ना बोल रहे थे।

इसलिए देश के बंटवारे के लिए गांधी जी जिम्मेदार नहीं, सावरकर और मोहम्मद अली जिन्ना जिम्मेदार हैं।"

अवकाश की सूचना

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिनांक 15 अगस्त को राष्ट्रदूत कार्यालय में अवकाश रहेगा। अतः दैनिक राष्ट्रदूत का अगला अंक 17 अगस्त को प्रकाशित होगा।

-सम्पादक

सलमान रश्दी की हालत स्थिर

- **उन्हें वैंटिलेटर से हटा दिया गया है तथा अब वे बात भी कर पा रहे हैं।**

न्यूयॉर्क, 14 अगस्त। प्रख्यात लेखक सलमान रुश्दी की हालत में सुधार हुआ है। रुश्दी को वेंटीलेटर से भी हटा दिया गया है और वो अब बात भी कर रहे हैं। उन पर एक दिन पहले न्यूयॉर्क में हमला किया गया था। अमेरिकी प्राधिकारियों ने इस हमले को लक्षित, बिना उकसावे का और पूर्व नियोजित बताया। मुंबई में जन्मे विवादास्पद लेखक रुश्दी को द सैटेनिक वर्सेज लिखने के बाद कई सालों तक इस्लामी चरमपंथियों से मौत की धमकियों का सामना करना पड़ा था। उन्हें न्यूजर्सी के 24-वर्षीय निवासी हादी मतार ने पश्चिमी न्यूयॉर्क राज्य में एक कार्यक्रम में चाकू मार दिया था।

चौटाउक्वा इंस्टीट्यूशन के अध्यक्ष माइकल हिल ने शनिवार रात को ट्वीट किया, सलमान रुश्दी अब वेंटीलेटर पर नहीं हैं और बातचीत कर रहे हैं। सभी लोग दुआएं कर रहे हैं।

दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला का निधन

राकेश झुनझुनवाला शेयर बाजार के सबसे बड़े निवेशकों में से एक थे, वे जब कॉलेज में थे तभी से उन्होंने शेयर बाजार में हाथ आजमाना शुरू कर दिया था

- **झुनझुनवाला ने 1985 में 5,000 रुपये से निवेश की शुरुआत की थी। सितंबर, 2018 तक यह निवेश बढ़कर 11,000 करोड़ रुपये हो गया था। जानकारी के मुताबिक, वर्तमान में झुनझुनवाला की कुल संपत्ति 43 हजार करोड़ रुपये से अधिक है।**
- **राकेश झुनझुनवाला की आयु 62 साल थी, उन्हें कार्डिएक अरैस्ट के बाद मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।**

मुंबई, 14 अगस्त। शेयर बाजार के दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला का निधन हो गया है। बताया जा रहा है कि उन्होंने रविवार सुबह मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस ली। जानकारी के मुताबिक, कुछ सप्ताह पहले ही वह अस्पताल से डिस्चार्ज हुए थे। उनका निधन किन कारणों से हुआ है, अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ है। झुनझुनवाला 62 साल के थे। जानकारी के मुतबिक, आज सुबह 6:45 मिनट पर उनका निधन हो गया। झुनझुनवाला के परिवार में उनकी पत्नी रेखा झुनझुनवाला, बेटी निश्था व दो बेटे आर्यमन और आर्यवीर हैं।

झुनझुनवाला के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा, वह अद्भुत व्यक्ति थे। जीवन से भरपूर, हाजिर जवाबी और व्यावहारिक थे। उन्होंने कहा, झुनझुनवाला अपने पीछे आर्थिक दुनिया में अमिट योगदान छोड़ गए हैं। वह भारत की प्रगति को लेकर बहुत जुनूनी थे।

ब्रीच कैंडी अस्पताल की डॉ. प्रतीत समदानी ने बताया कि राकेश झुनझुनवाला को अचानक कार्डियक अरेस्ट हुआ, जो उनकी मौत का कारण बना। वह क्रोनिक किडनी रोग से भी पीड़ित थे, क्रोनिक डायलिसिस पर थे। वह मधुमेह के रोगी थे और हाल ही में उनकी एंजियोप्लास्टी हुई थी।

कई तरह के व्यापारों में निवेश करने वाले राकेश झुनझुनवाला ने हाल ही में अकासा एयरलाइंस पर भी निवेश किया था। इसमें 40 प्रतिशत हिस्सेदारी झुनझुनवाला के पास थी।

कुलगाम में ग्रनैड हमला, एक जवान शहीद

- **शनिवार देर रात आतंकियों ने पुलिस पर ग्रनैड हमला किया जिसमें एक पुलिसकर्मी शहीद हो गया।**

श्रीनगर, 14 अगस्त। जम्मू कश्मीर के कुलगाम जिले में ग्रेनेड हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गयी। पुलिस ने रविवार को बताया कि, यह घटना शनिवार रात को दक्षिण कश्मीर जिले के कैमोह इलाके में हुई। कश्मीर मंडल की पुलिस ने ट्वीट किया, "कुलगाम के कैमोह में बीती रात ग्रेनेड हमला किया गया। इस आतंकी घटना में पुंछ के मेंढर में तैनात ताहिर खान नामक पुलिसकर्मी घायल हो गया।" पुलिस ने बताया कि, घायल पुलिसकर्मी को अनंतनाग के जीएमसी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी मौत हो गयी। 13 अगस्त को श्रीनगर में अली जान रोड, ईदगाह के पास आतंकियों की ओर से सुरक्षाबलों पर ग्रेनेड फेंका गया था।

महाराष्ट्र में मंत्रालयों के मामले में भाजपा भारी पड़ी शिंदे गुट पर

वित्त, गृह, जल संसाधन एवं आवासन विभाग जैसे चार मंत्रालय उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने अपने पास रखे

- **इसके साथ ही यह भी साफ हो चुका है कि, भले ही भाजपा ने उन्हें शिंदे सरकार में उप मुख्यमंत्री पद दिया है, लेकिन बाकी मामलों में उन्हें फ्री हैंड दिया गया है।**
- **भाजपा को मिले मंत्रालय-गृह मंत्रालय, राजस्व मंत्रालय, हाउसिंग, महिला एवं बाल विकास, वित्त, उर्जा, गृह निर्माण, सिंचाई इरिगेशन, पर्यटन। सहकारिता, ओ.बी.सी. मामलों का मंत्रालय हायर एंव टैक्निकल एजूकेशन, वन मंत्रालय, पीडब्लूडी, मेडिकल एजूकेशन, ग्रामीण विकास, फूड एंड सिविल सप्लाई, आदिवासी विकास, टैक्सटाइल एवं लेबर।**

मुंबई, 14 अगस्त। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे सरकार के कैबिनेट विस्तार के बाद मंत्रालयों का बंटवारा भी हो चुका है। अब सवाल यह उठता है कि, मंत्रालयों के बंटवारे में किसकी चली है। जिस तरह से विभाग बांटे गए हैं, उससे स्पष्ट है कि, इसमें देवेंद्र फडणवीस ही बीस साबित हुए हैं। इसके साथ ही यह भी साफ हो चुका है कि, भले ही भाजपा ने उन्हें शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम पद दिया है, लेकिन बाकी मामलों में फ्री हैंड दिया गया है।

रविवार को घोषित शिंदे सरकार के विभागों के बंटवारे पर नजर डालें तो फडणवीस का मास्टरस्ट्रोक साफ दिखेगा। असल में एनसीपी ने महाविकास अघाड़ी सरकार में शिवसेना को सीएम पद देकर अहम विभाग अपने पास रखे थे। अब भाजपा के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने भी यही फॉर्मूला यूज किया है। ध्यान देने वाली बात यह है कि फडणवीस ने उन चार विभागों को अपने पास रखा है, जो एनसीपी के चार बड़े नेताओं के पास थे। इसमें अजित पवार का वित्त, दिलीप वलसे पाटिल का होम, जयंत पाटिल का जल संसाधन और जितेंद्र आव्हाड का आवास विभाग अपने पास रखा है। इस तरह से देखा जाए तो शिंदे-फडणवीस सरकार की कैबिनेट में भाजपा ने ज्यादातर मलाईदार हिसाब अपने ही नेताओं के पास रखा बता दें कि यह सभी विभाग ऐसे हैं, जिनका आम जनता से सीधा ताल्लुक है। इन विभागों को अपने पास रखने के साथ ही भाजपा ने अपनी मंशा साफ कर दी है। भाजपा के पास यह विभाग होने से महाराष्ट्र में आम लोगों से उसका संपर्क बढ़ेगा। इसके साथ ही जनहित के फैसलों को लागू करते हुए भाजपा यहां पर पार्टी विस्तार की अपनी पॉलिसी पर भी काम कर सकेगी। महाविकास अघाड़ी सरकार में यह खेल एनसीपी खेल रही थी। अब फडणवीस ने भी बड़े ही सधे अंदाज में यह चाल चली है।

भाजपा को मिले मंत्रालय-

गृह मंत्रालय, राजस्व मंत्रालय, हाउसिंग, महिला एवं बाल विकास, वित्त, उर्जा, गृह निर्माण, सिंचाई इरिगेशन, पर्यटन। सहकारिता, ओबीसी मामलों का मंत्रालय हायर एंव टेक्निकल एजूकेशन, वन मंत्रालय, पीडब्लूडी, मेडिकल एजूकेशन, ग्रामीण विकास, फूड एंड सिविल सप्लाई, आदिवासी विकास, टेक्सटाइल,लेबर।

शिंदे गुट के पास मंत्रालय-

नगर विकास, एफ डी ए, जल आपूर्ति, इंड्स्ट्री, स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, आबकारी मंत्रालय, स्वास्थ्य, रोजगार गारंटी स्कीम।

38 साल बाद मिला शहीद का शव

- **दुनिया के सबसे दुर्गम युद्ध क्षेत्र सियाचिन से 38 साल बाद उत्तराखण्ड के एक जवान का शव बरामद हुआ है।**

नैनीताल, 14 अगस्त (वार्ता)। दुनिया के सबसे दुर्गम युद्ध क्षेत्र सियाचिन से 38 साल बाद उत्तराखंड के एक जवान का शव बरामद हुआ है। सेना की ओर से रविवार को इसकी जानकारी हल्द्वानी में रह रहे शहीद की पत्नी व परिजनों को दी गयी। लंबे समय बाद एक बार फिर परिजनों के घाव फिर हरे हो गये। उपजिलाधिकारी मनीष कुमार ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि, लांसनायक चंद्रशेखर हरबोला सेना की 19 कुमाऊं रेजीमेंट में तैनात थे। वर्ष 1984 में वह सियाचिन में तैनात थे। बताया जाता है कि, उनके दल को पाकिस्तान सेना के खिलाफ मेघदूत आपरेशन की जिम्मेदारी दी गयी।

विचार बिन्दु

जब तक भारत का राजकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तब तक हम यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज है। –मोरारजी देसाई

आज़ादी का अमृत

हम सब बेहद खुशनसीब हैं कि देश की आज़ादी के अमृत महोत्सव के साक्षी बन रहे हैं। मुझ जैसे लोग तो और भी अधिक भाग्यशाली हैं जिन्होंने जन्म तो पराधीन भारत में लिया लेकिन अपने जीवन का बहुलांश स्वाधीन भारत में उसे निर्मित होते, बढ़ते और अनेक चुनौतियों से जूझते हुए देखते हुए जिया। आज ही के दिन, सन 1947 को महान भविष्य दृष्टा पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए जो कहा था, उसे याद करना बहुत प्रासंगिक लग रहा है। अपने मूल अंग्रेज़ी भाषण में उन्होंने जो कहा था, उसका स्थूल अनुवाद यह है: ***हमने नियति को मिलने का एक वचन दिया था, और अब समय आ गया है कि हम अपने वचन को निभाएं, पूरी तरह ना सही, लेकिन बहुत हद्द तक। आज रात बारह बजे, जब सारी दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता की नयी सुबह के साथ उठेगा। एक ऐसा क्षण जो इतिहास में बहुत ही कम आता है, जब हम पुराने को छोड़ नए की तरफ जाते हैं, जब एक युग का अंत होता है, और जब वर्षों से शोषित एक देश की आत्मा, अपनी बात कह सकती है। ये एक संयोग है कि इस पवित्र मौके पर हम समर्पण के साथ खुद को भारत और उसकी जनता की सेवा, और उससे भी बढ़कर सारी मानवता की सेवा करने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं।***

आज़ाद भारत की इन 75 वर्षों की यात्रा बहुत रोमांचक, उत्तेजक, आह्लादक और प्रेरक रही है। लम्बी पराधीनता के बाद स्वाधीन हुए देश के सामने अनगिनत चुनौतियां थीं। यह देश का सौभाग्य है कि इसे अपने स्वाधीन होने के तुरंत बाद जिन नेताओं का नेतृत्व प्राप्त हुआ वे न केवल अपनी देशभक्ति में अतुलनीय थे, उनके पास एक सुलझी हुई दृष्टि और बड़ा सोच भी था। उनके नेतृत्व में देश ने विकास की जो यात्रा प्रारम्भ की, वह अभी भी अनवरत ज़ारी है। इस बीच देश की बागडोर अनेक राजनीतिक दलों और भिन्न-भिन्न सोच वाले नेताओं ने थामी। बेशक उनके दृष्टिकोण अलग-अलग थे, लेकिन इस बात में कोई संशय नहीं है कि वे सभी देश को आगे ले जाना चाहते थे। आज जब देश की स्वाधीनता की पचहत्तरवीं वर्षगांठ पर हम पीछे मुड़कर देखते हैं और यह याद करने का प्रयास करते हैं कि उस समय देश किस अवस्था में था, और फिर स्मृति में निर्मित उस तस्वीर की तुलना आज के भारत से करते हैं तो हमें अपनी विकास यात्रा पर संतोष और गर्व की अनुभूति होती है। यह सच है कि बहुत बार हम उदास भी होते हैं, निराश भी और कभी-कभी नाराज़ भी। लेकिन यह सब हर विकास यात्रा में होता है।

मैं इन पचहत्तर वर्षों की उपलब्धियों को याद करने का प्रयास कर रहा हूं। यह कोई आसान काम नहीं है। हमने बहुत कुछ किया है। फिर भी अगर इन चीज़ों पर एक नज़र डालें तो आप जान पाएंगे कि हमारी यह यात्रा कितनी उपलब्धि पूर्ण रही है। आज़ादी के तुरन्त बाद हमने योजनाबद्ध आर्थिक विकास की राह चुनी और विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा विकास का राजमार्ग निर्मित किया। इसी के साथ-साथ अनेक बड़े संस्थान और संयंत्र बनाए। यह समय की मांग थी। हमारे इस सोच की परिणति यह हुई कि जहां 1947 में हमारे देश में सुई तक नहीं बनती थी, आज न केवल अपनी आवश्यकता की तमाम चीज़ें हम बना रहे हैं, उनका निर्यात भी कर रहे हैं। भाखड़ा नांगल जैसे बड़े बांध और भिलाई राउरकेला जैसे अनेक इस्पात संयंत्र उसी काल की देन हैं। आज़ादी के बाद के कई वर्ष तक हम समाज वादी ढांचे पर काम करते रहे जिसकी वजह से देश के दूरस्थ इलाकों तक आधारभूत सुविधाएं पहुंचाई जा सकीं। सड़कों का निर्माण हुआ, देश के अधिकांश लोगों तक बिजली और पानी पहुंचा। चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार करके अपने नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की दिशा में खूब काम किया गया। बड़े अभियान चलाकर चेचक और पोलियो का उन्मूलन किया गया और हाल में कोविड जैसी बड़ी महामारी से लड़ने के लिए स्वदेशी टीके कोवैक्सिन का निर्माण किया गया और देश की आबादी के बड़े भाग को टीके द्वारा सुरक्षा प्रदान की गई। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की वजह से लोगों की औसत आयु में वृद्धि हुई।

स्वास्थ्य के साथ-साथ हमने शिक्षा के क्षेत्र में भी खूब काम किया। नए स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय खोले गए, आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थान बनाए गए। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों ने गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के मानक स्थापित किए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, मिड डे मील योजना, सर्व शिक्षा अभियान आदि के माध्यम से हमने शिक्षा की सुलभता को नए पंख दिए।

देश के नागरिकों की आर्थिक दशा सुधारने के लिए हमने अनेक काम किए। रोज़गार के अवसर सृजित किए गए, कृषि, व्यवसाय, उद्योग आदि का खूब विस्तार किया और आर्थिक सुधारों वाली ऐसी नीतियां बनाई जिनसे कतार के अंत में खड़ा व्यक्ति भी लाभान्वित हुआ। हरित और श्वेत क्रांति ने इस देश के आम नागरिक को समुचित पोषण प्रदान किया। राजाओं के प्रिवीपर्स समाप्त कर असमानता पर प्रहार किया गया तो रेलों और बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर उन्हें बेहतर सेवा प्रदाता बनाया गया। बंधुआ मज़दूरी पर रोक लगाकर मानवीय गरिमा को पुनर्स्थापित किया गया तो मनरेगा के अंतर्गत ग्रामीणों को सौ दिन के रोज़गार की गारण्टी देकर उनकी जीवन स्थितियों को बेहतर बनाया गया। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम जैसी पहल भी हमने की।

सुरक्षा की दृष्टि से भी हालांकि हमें अपने पड़ोसी देशों की बदनीयती का बार-बार शिकार होना पड़ा है, हमने कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त कर और सर्जिकल स्ट्राइक व एयरस्ट्राइक कर दुनिया को दिखा दिया है कि हम किसी से कम नहीं हैं। पोकरण में किया गया आणविक विस्फोट भी हमारी शक्ति का परिचायक था।

यह बात रेखांकित की जाने काबिल है कि नव स्वाधीन देश के पहले प्रधानमंत्री ने कला साहित्य संस्कृति को भी अपनी प्राथमिकता में रखा, इनके विकास के लिए अकादमियों की स्थापना की और इन्होंने तो खूब काम किया ही, भारतीय कलाकारों और विद्वानों ने भी अपने-अपने स्तर पर इस देश का नाम रोशन किया। सत्यजित राय ने ऑस्कर पाकर, अमर्त्य सेन ने नोबल पुरस्कार पाकर और पण्डित रवि शंकर और उस्ताद अली अकबर खान ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जगह दिलाकर, आकाशवाणी और दूरदर्शन ने जन रुचि का परिष्कार करके और बॉलीवुड सहित सभी क्षेत्रीय सिनेमाओं ने बेहतरीन फ़िल्में बनाकर देश का मान बढ़ाया। हाल में गीतांजलि श्री ने बुकर पाकर भी इस देश का गौरव बढ़ाया है। इसी तरह खेलों के क्षेत्र में भी हमने अनेक उपलब्धियां अर्जित की हैं। हॉकी में स्वर्ण पदकों के अलावा शतरंज, एयरराइफल,मुक्केबाजी के साथ-साथ देश के सर्वाधिक लोकप्रिय खेल क्रिकेट में हमने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विभिन्न बड़ी खेल स्पर्धाओं जैसे एशियाई खेलों का अपने यहां आयोजन कर हमने खेल सुविधाओं का भी काफी विस्तार किया है। जितना काम कला साहित्य संस्कृति और खेलों के क्षेत्र में हुआ उससे कम विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में नहीं हुआ। परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम, इसरो की स्थापना, परमाणु रिएक्टर अप्सरा का निर्माण, चंद्रयान, पहले भारतीय उपठाह आर्यभट्ट का प्रक्षेपण, पहले उपग्रह रोहिणी का कक्षा में स्थापित होना, स्वदेशी संचार उपठाह का निर्माण, राकेश शर्मा का अंतरिक्ष में जाना, देश के पहली और दुनिया के दूसरे परखनली शिशु का जन्म ऐसी कुछ उपलब्धियां हैं जो तुरंत याद आ रही हैं।

इस बात को कभी नहीं भूला जा सकता है कि भारत ने आज़ाद होते ही अपने सभी नागरिकों को बग़ैर किसी भेद भाव के वयस्क नागरिक मताधिकार प्रदान किया। आज़ादी के तुरंत बाद पांच सौ साठ से ज़्यादा देशी रियासतों को भारत संघ में विलीन करने के बड़े काम के बाद भी हमारी राजनीतिक गतिविधियां एक के बाद एक मंज़िलें तै करती गई हैं। हमारे यहां लोकतंत्र न केवल जीवित है, फल फूल रहा है। समय पर चुनाव होते हैं और जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है। वे प्रतिनिधि यथावश्यकता कानून बनाते हैं। पंचायती राज के लिए संवैधानिक संशोधन, बंधुआ मज़दूरी पर प्रतिबंध, सूचना का अधिकार, धारा 377 ऐसे ही कुछ मील के पत्थर हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं। राजनीतिक रूप से हमने गोआ और पॉण्डिचेरी को भारत में मिलाया तो बांग्लादेश के निर्माण में हम सहयोगी बने। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुट निरपेक्ष आंदोलन में हमारी भूमिका और पंचशील की हमारी परिकल्पना अविस्मरणीय है।

सुरक्षा की दृष्टि से भी हालांकि हमें अपने पड़ोसी देशों की बदनीयती का बार-बार शिकार होना पड़ा है, हमने कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त कर और सर्जिकल स्ट्राइक व एयरस्ट्राइक कर दुनिया को दिखा दिया है कि हम किसी से कम नहीं हैं। पोकरण में किया गया आणविक विस्फोट भी हमारी शक्ति का परिचायक था।

एक छोटे-से आलेख में देश की पचहत्तर वर्षों की उपलब्धियों को समेट पाना आसान नहीं है। मैंने इस बात का प्रयास भी नहीं किया है। बस, कुछ संकेत जुटाए हैं। इनसे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी यह यात्रा कैसी रही है। फिर भी, इस बात को स्मरण रखा जाना ज़रूरी है कि कोई भी यात्रा सदा सीधे-सपाट मार्ग पर नहीं होती है। बीच-बीच में ऐसी बहुत सारी चीज़ें आती हैं जो उस यात्रा को सरल-सुगम नहीं रहने देती हैं। अब यह यात्रा करने वालों पर निर्भर करता है कि वे इन कठिनाइयों का सामना कैसे करते हैं। शायद इसी बात को ध्यान में रखकर यह कहा गया होगा किसतत जागरूकता ही स्वाधीनता का मोल है।

आज़ादी का दिन हो और गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर की अमर रचना चित्त जेथा भयशून्य याद न आए। महाकवि ने आज़ादी को जिस तरह स्पष्ट किया है, उसे हमें सदा स्मरण रखना चाहिए, और वैसी आज़ादी के लिए सदैव प्रयत्न रत रहना चाहिए। उन्होंने लिखा है: ***जहां चित्त भय से शून्य हो/ जहां हम गर्व से माथा ऊंचा करके चल सकें/ जहां ज्ञान मुक्त हो/..... उसी स्वातंत्र्यस्वर्ग में इस सोते हुए भारत को जगाओ।*** (हिंदी अनुवाद: शिव मंगल सिंह सुमन)

प्रख्यात हिंदी कवि नंद चतुर्वेदी ने अपनी बहु प्रशंसित कविता पराधीनता मुक्ति का दिन में जो लिखा है उसके एक अंश को स्मरण करते हुए मैं स्वयं सहित सब को स्वाधीनता दिवस के इस अमृत पर्व पर हार्दिक मंगल कामनाएं प्रेषित करता हूं। कविता का अंश यह है:–

कितने कठिन दिन हैं स्वाधीनता के/ कभी धुंधले होते हैं शिखर, कभी अनंत रोशनी से चमकते/ कभी मिलते हैं प्रश्नों के उत्तर/ कभी जान दे देनी पड़ती है, प्रश्न पूछने वालों को/ कभी लगता है समय अपरिचित, अनात्मीय, हिंसक, आततायी/ कभी सौम्य, उदार, आत्मीय, मृदुभाषी/ कभी सब लगते हैं ताकतवर धक्का-मुक्की करते/ सभी जगह फ़ैले-पसरे/ कभी सब लगते हैं उदास, कंधों पर फटा कम्बल डाले दीन/ अभी असीम आशा के दौड़ते रथ पर बैठे/स्वाधीनता कहती है/ मुझे परिभाषित करो/ यदि मैं तुम्हारा सपना हूं तो तुम्हारा यथार्थ भी हूं/ तुम्हारा रोज़ खटखटाती हूं दरवाज़ा/ तुम्हारा घर आंगन मेरी संसद है/ यहीं भटकती रहती हूं तुम्हारी यातनाएं लेकर/ मैं तुम्हारी इच्छा-शक्ति हूं/ तुम्हारी विजय की अकुण्ठित कामना।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

हमारे प्रथम स्वतंत्रता दिवस की कुछ भूली-बिसरी यादें

- **बापू खुद आजादी के जश्न में शामिल नहीं हुए**
- **वे बंगाल में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए आमरण अनशन कर रहे थे**

हमारे देश के स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। उनके साथ समूचा देश था उनके अगिनत अनुयायियों में सरदार पटेल, नेहरू, राजेंद्र प्रसाद, मोलाना आजाद आदि प्रमुख थे। बापू ने आजाद भारत की बागडोर नेहरू जी को सौंपने का तय किया और सरदार पटेल आदि को उनका नेतृत्व मानने को कहा। जब तय हो गया कि भारत 15 अगस्त 1947 को आज़ाद होगा तो जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने महात्मा गांधी को पत्र भेजा। इस ख़त में लिखा था, बापू 15 अगस्त हमारा पहला स्वाधीनता दिवस होगा। आप राष्ट्रपिता है । आपसे प्रार्थना है कि आप इसमें शामिल हो कर हम सबको अपना आशीर्वाद दें एवं हमारा मार्गदर्शन करें। गांधीजी ने इस पत्र का जवाब भिजवाया, जब कलकत्ता में हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे की जान ले रहे हैं, ऐसे में मैं जश्न मनाने के लिए कैसे सोच सकता हूँ और कैसे आ सकता हूं? मैं दंगा रोकने के लिए अपनी जान दे दूंगा। हम सब को यह जान कर हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि जब देश को 15 अगस्त,1947 को आजादी मिली तो बापूजी खुद आजादी के जश्न में शामिल नहीं हुए थे क्योंकि बापूजी आज़ादी के दिन दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर बंगाल में गये हुये थे, जहां वे हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए आमरण अनशन कर रहे थे।

जवाहर लाल नेहरू ने ऐतिहासिक भाषण 'ट्रिस्ट विद डेस्टनी' 14 अगस्त की मध्यरात्रि को वायसराय लॉज (मौजूदा राष्ट्रपति भवन) से दिया था। तब नेहरू प्रधानमंत्री नहीं बने थे। इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना। यह एतिहासिक भाषण हमारे मस्तिष्क पर तत्कालीन भारत की दशा और स्वतंत्रता सेनानियों के स्वप्नों का मानचित्र प्रस्तुत करता है इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना, लेकिन गांधी उस दिन नौ बजे ही सोने चले गए थे।

15 अगस्त 1947 को जवाहर लाल नेहरू का भाषण :- जवाहर लाल नेहरू ने अपने भाषण में कहा कि कई साल पहले हमने भाग्य को बदलने का प्रयास किया था। आज वो समय आ गया है जब हम गुलामी से मुक्त हो जाएंगे। पूरी तरह नहीं लेकिन यह महत्वपूर्ण है। जब आधी रात 12 बजे पूरी दुनिया सो रही होगी। इस दौरान भारत स्वतंत्र जीवन के साथ नई शुरुआत करेगा। नेहरू के इस भाषण ने हर भारतीय के अंदर नए भारत के सपने की ललक जगाने का काम किया। नेहरू ने अपने भाषण में कहा- ये ऐसा समय है जो इतिहास में बेहद कम देखने को मिलता है। पुराने से नए की ओर जाना, एक युग का अंत होना। अब सालों से शोषित देश की आत्मा अपनी बात कह सकती है। उन्होंने कहा कि यह संयोग है कि हम पूरे समर्पण के साथ भारत और उसकी जनता की

डॉ. जे.के. गर्ग

सेवा के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं। इतिहास की शुरुआत के साथ ही भारत ने अपनी खोज शुरू की और न जाने कितनी सदियां इसकी भव्य सफलताओं और असफलताओं से भरी हुई हैं।

दूसरे युग की भारत खुद को खोज रहा है... :- नेहरू ने कहा कि समय अच्छा हो या बुरा, भारत ने कभी अपने आदर्शों को नहीं भुलाया, जिसने हमेशा हमें आगे बढ़ने की शक्ति दी। आज एक युग का अंत हो रहा है लेकिन दूसरे युग की तरफ भारत खुद को खोज रहा है। जिस उपलब्धि की हम खुशियां मना रहे हैं। वो नए अवसरों के खुलने के लिए केवल एक कदम है। इससे भी बड़ी जीत और उपलब्धियां हमारा इंतजार कर रही हैं।

किसी भी आंख में न रहे आंसू... :- जवाहर लाल नेहरू ने भारतीयों को संबोधित करते हुए आगे कहा कि भविष्य में चैन से नहीं बैठना है। हम जो बात कह रहे हैं या कर रहे हैं उसे पूरा किए बगैर आराम नहीं करना है। भारत की सेवा का मतलब है करोड़ों पीड़ितों की सेवा करना यानी गरीबी को मिटाना, बीमारियों और अवसर की असमानता को खत्म करना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही इच्छा है कि किसी भी आंख में आंसू न रहें। नेहरू ने आगे कहा कि लोगों की आंखों में जब तक आंसू हैं वो पीड़ित हैं। तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। इसके लिए हमें मेहनत करने की जरूरत है। ये सपने भारत के लिए हैं साथ पूरे विश्व के लिए भी हैं। कोई भी देश अब खुद को अलग नहीं सोच सकता है क्योंकि सभी राष्ट्र और सभी लोग एक-दूसरे से बड़ी निकटता से जुड़े हुए हैं। शांति को विभाजित नहीं किया जा सकता है। ऐसे ही स्वतंत्रता को भी विभाजित नहीं किया जा सकता है। हमें ऐसे भारत का निर्माण करना है जहां उसके सारे बच्चे रह सकें।

एक नए तारा का उदय हुआ, काश यह उम्मीद धूमिल न हो... :- नेहरू ने अपने संबोधन में कहा कि अब सही समय आ चुका है जब सालों के संघर्ष के बाद अब भारत जागृत है और खड़ा है। हमारे लिए नया इतिहास शुरू हो चुका है। एक ऐसा इतिहास जिसका निर्माण हम करेंगे। जिसे हम बनाएंगे और जिसके बारे में अन्य लोग देखेंगे। एक नए तारे का जन्म हुआ है और यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। एक नई उम्मीद का जन्म हुआ है, काश ये तारा कभी अस्त न हो और ये उम्मीद कभी धूमिल न हो।

15 अगस्त, 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने अपने दफ़्तर में काम किया। दोपहर में नेहरू ने उन्हें अपने मंत्रिमंडल की सूची सौंपी जिनमें सरदार पटेल, आर ऐ चेट्टी बाबा साहिब, अम्बेडकर, बलदेवसिंह, गोपालस्वामी, आयेंगर, मोलाना आज़ाद, राजेंद्र प्रसाद, श्यामा प्रसाद मुख़र्जी ,जजीवंराम, एच सी भाभा, रफी अहमद किदवई , डा अमृत कौर, वी गाडगील, केसी नियोगी शामिल थे। इसके बाद नेहरु में इंडिया गेट के पास प्रिंसेस गार्डन में एक सभा को संबोधित किया।

डॉ. जे.के.गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

खुद जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में ढ़ाई माह से नहीं आया पानी!

चूरू, (कासं)। चूरू जिला मुख्यालय की भालेरी रोड पर स्थित खुद जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में ढ़ाई माह से पानी नहीं आ रहा है। हालात यह हैं कि जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में स्थित हनुमानजी के मंदिर और गोगाजी महाराज के मंदिर में पूजा करने के लिए भी पानी नहीं मिल रहा है। जानकारी के अनुसार रीको की एक नम्बर रोड़ पर स्थित जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में लगभग ढाई माह पहले पानी की सप्लाई बंद हो गई थी। उसके बाद आज तक यहां किसी भी संबंधित अधिकारी और कर्मचारी ने इसकी कोई सुध नहीं ली है। यहां पाइप लाइन में कोई 'डाट' आ गई बताई। उसे सही करने का समय किसी भी अधिकारी व कर्मचारी के पास नहीं है। जलदाय विभाग ग्रामीण के कार्यालय में मौजूद संबंधित अधिकारी और कर्मचारी सब कुछ जानकर भी अनजान बने हुए हैं।

इतना ही नहीं इस कार्यालय के मुख्य द्वार सहित कहीं भी इसके नाम का बोर्ड आदि नहीं लगा हुआ है। अधिकारी कहते हैं कि जलदाय विभाग को सब जानते हैं, इसलिए कार्यालय भवन पर जलदाय विभाग का नाम लिखने की ज़रूरत ही नहीं है। लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ उचित कार्यवाही नहीं होने से ही ये लापरवाही की हदें पार कर रहे हैं।

जलदाय विभाग ग्रामीण का कार्यालय पानी के बिना सूखा पड़ा है।

लोगों का कहना है कि इन लापरवाह अधिकारियों की पहुंच ऊपर तक है। तभी तो कलैक्टर भी इनकी हर लापरवाही को अनदेखा कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें भी तो शांति से नौकरी करनी है। वे क्यों कोई झोड़ पालें।

कलेक्टर डॉ. सोनी को 'नागरिक सुरक्षा, सेवा पदक'

अलवर, (निसं)। जिला कलेक्टर एवं नागरिक सुरक्षा नियंत्रक डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी को आपदा प्रबंधन एवं नागरिक सुरक्षा कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 15 अगस्त के अवसर पर 'राष्ट्रपति महोदय के नागरिक सुरक्षा सराहनीय सेवा पदक' दिये जाने की घोषणा की गई है। उल्लेखनीय है कि जिला कलेक्टर एवं नागरिक सुरक्षा नियंत्रक अलवर डॉ. सोनी द्वारा झालावाड, जालोर व नागौर जिला कलेक्टर रहते हुए विभिन्न आपदा प्रबंधन एवं नागरिक सुरक्षा कार्यों में उत्कृष्ट कार्य किये हैं।

कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी।

- **कलेक्टर ने नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में कई प्रशिक्षण कोर्सेज भी किये है**

इन्हें जालोर जिला कलक्टर रहते हुए अपनी जान की परवाह किये बिना बाढ में फंसे 8 लोगों को जीवित निकालने पर पूर्व में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपति महोदय का 'उत्तम जीवन रक्षक पदक' से नवाजा जा चुका है। इसके साथ ही डॉ. सोनी को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा महाविद्यालय नागपुर में वर्ष 2016 में सर्वश्रेष्ठ नियंत्रक नागरिक सुरक्षा का अवार्ड भी प्रदान किया जा चुका है। इन्होंने नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर विभिन्न प्रशिक्षण कोर्सेज भी किये हैं।

सेना का तिरंगे के साथ 75 किलोमीटर साइक्लोथोन का आयोजन

अजमेर, (कासं)। नसीराबाद के अग्निबाज गनर्स ने स्वतंत्रता के पिचहत्तर वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में रविवार को एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। पिचहत्तर नाम के इस कार्यक्रम में 20 प्रतिभागियों ने साईक्लोथोन में तिरंगे के साथ कुल 75 किलोमीटर की दूरी पूरी की। साईक्लोथोन का आरम्भ नसीराबाद से सुबह 6 बजे हुआ।

साईक्लोथोन का मार्ग अजमेर ग्रामीण शहर के विभिन्न इलाकों, राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल अजमेर से होकर नसीराबाद सैन्य स्टेशन के स्टेडियम में सुबह 10 बजे समाप्त हुआ। राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल अजमेर के कैडेटों ने भी साईक्लोथोन लैप में भाग लिया। प्रतिभागियों का स्थानीय लोगों और स्कूली छात्रों द्वारा उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम के समापन पर संबोधन के लिए ब्रिगेडियर ए मुखर्जी स्टेशन कमांडर नसीराबाद ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य देशभक्ति और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना है।

साईक्लोथोन के अलावा नसीराबाद में सैन्य उपकरणों की प्रदर्शनी, देशभक्ति गीत लेखन और रंगोली प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया है। इससे पहले शनिवार को स्टेशन कमांडर ने जिले के उन सैन्य कार्मियों के परिजनों से भी बातचीत की जिन्होंने देश की सेवा के दौरान अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। इस अवसर पर परिजनों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।

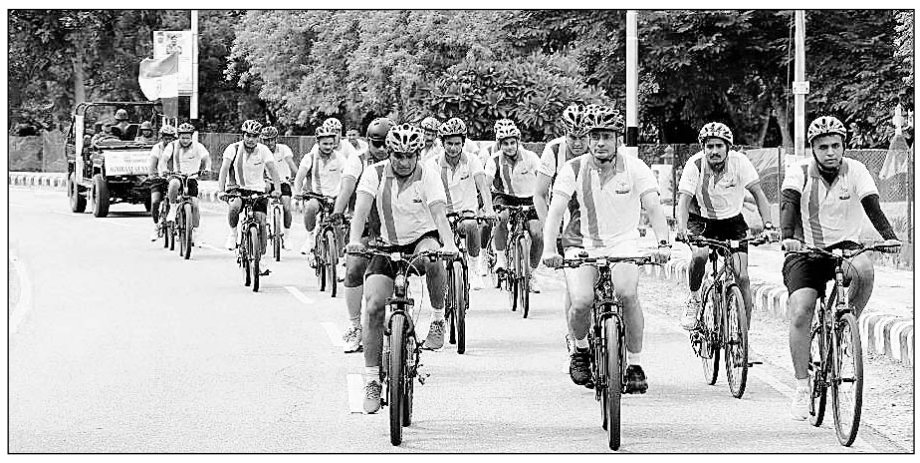

20 प्रतिभागियों ने साइक्लोथोन में तिरंगे के साथ भाग लिया।

राशिफल सोमवार 15 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 9:07 तक, धृति योग रात्रि 11:23 तक, बव करण प्रात: 9:49 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज संकट चतुर्थी व्रत है। चन्द्रोदय रात्रि 9:35 पर होगा। आज बहुला चौथ, पंचक है और श्रवण तपस्या पूर्ण (जैन)। आज भारतीय स्वतंत्रता दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:39 तक, शुभ 9:17 से 10:54 तक, चर 2:09 से 3:46 तक, लाभ-अमृत 3:46 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 7:01

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामला म संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क
धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं और धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला
महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
आवश्यक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है और मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव दूर होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कल्ला ने की तिरंगा यात्रा की अगवानी, पैदल चल दिया देशभक्ति का संदेश

बीकानेर, (कासं)। आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों के तहत रविवार को अखिल भारतीय पुष्टिकर सेवा परिषद द्वारा तिरंगा पैदल यात्रा का आयोजन किया गया।

शिक्षा मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने परिषद के जस्सोलाई स्थित कार्यालय से तिरंगा यात्रा की अगवानी की। पैदल यात्रा यहां से शुरू होकर एमएम स्कूल, नत्थूसर गेट, बारह गुवाड़ चौक, रत्तानी व्यास चौक, आचार्य चौक, मोहता चौक, दम्माणी चौक होते हुए शहर के विभिन्न मोहल्लों से होकर गुजरी। इस दौरान मेरी शान तिरंगा है जैसे देशभक्ति गीतों और भारत माता की जयघोष के साथ शहरी परकोटा गुंजायमान हो गया। शिक्षा मंत्री डॉ. कल्ला ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव मनाना प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का विषय है। हमें दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का नागरिक होने का अभिमान होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि बीकानेर शहर के स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी की लड़ाई में अनेक यातनाएं सही। वैद्य मघाराम के परिवार की तीन पीढियां इस दौरान जेल में रही। अमृत महोत्सव ऐसे देशभक्तों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करने का अवसर है। अखिल भारतीय पुष्टिकर सेवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रूपकिशोर व्यास ने बताया कि आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर तिरंगा पैदल यात्रा का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य हर नागरिक 13 से 15 अगस्त तक अपने घरों पर तिरंगा फहराएं एवं देशप्रेम की भावना जागृत हो। तिरंगा पैदल यात्रा कार्यक्रम में सेवा परिषद के प्रदेशाध्यक्ष जयगोपाल जोशी, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता गेवरचंद जोशी, जुगलकिशोर ओझा , जिलाध्यक्ष गोपाल बिस्सा, श्रीलाल व्यास, विजय आचार्य, नवरतन व्यास, सुमित बिस्सा, अरुण व्यास, शिवशंकर बिस्सा, राजकुमार चूरा,उदय व्यास, मुकेश पुरोहित, चिराग जोशी सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।

1100 तिरंगे वितरित : आचार्य श्री धरणीधर महादेव मंदिर प्रांगण में आज सुबह 8 बजे केन्द्र एवं राज्य सरकार के निर्देशानुसार आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर स्कूल के बच्चों को 1100 तिरंगे झण्डों का वितरण किया गया। यह जानकारी देते हुए धरणीधर महादेव मंदिर ट्रस्ट के सचिव जितेन्द्र आचार्य ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नोखा विधायक बिहारी लाल बिश्नोई, विशिष्ट अतिथि कर्मचारी नेता भंवर पुरोहित, पूर्व उप महापौर अशोक आचार्य थे। कार्यक्रम संयोजक दुर्गाशंकर आचार्य ने बताया कि छोटे स्कूली बच्चों को आजादी के इतिहास का महत्व बताते हुए स्वतंत्रा दिवस के प्रति जज्बा पैदा कैसे हो इसकी जानकारी दी गई। मुख्य अतिथि नोखा विधायक बिहारी लाल बिश्नोई ने उपस्थित स्कूली बच्चों को स्वतंत्रता कैसे मिली इसकी जानकारी दी एवं स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को बताया। झण्डा वितरण कार्यक्रम को कांग्रेस नेता आनंद जोशी, कर्मचारी नेता भंवर पुरोहित, कर्मचारी नेता कैलाश आचार्य, मालचंद सुथार, कैलाश भार्गव ने भी संबोधित किया।

बीकानेर में शिक्षा मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला की अगुवाई में अखिल भारतीय पुष्टिकर सेवा परिषद ने तिरंगा पैदल यात्रा निकाली।

- आजादी के अमृत महोत्सव पर स्कूल के बच्चों को 1100 तिरंगे झण्डों का वितरण किया गया
- शहर की तंग गलियों में गूंजा भारत माता का जयघोष

इस अवसर पर शरीरिक शिक्षक रामेश्वर ओझा, शिक्षक सूरज माल पडिहार, शिक्षक गिरधर स्वामी भी उपस्थित थे। झण्डा वितरण कार्यक्रम में राजकीय उच्च माध्यमिक विधालयत श्रीरामसर, स्योर सक्सेस पाइंट सहित पांच स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया।

झण्डा वितरण कार्यक्रम के अंत में नोखा विधायक ने 1100 झण्डों का वितरण किया। इस अवसर पर आचार्य श्री धरणीधर ट्रस्ट, प्रखर परोपकार मिशन, टीम धरणीधर के समस्त पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी के क्षेत्रीय केन्द्र सार्दुलगंज में रविवार को महापौर सुशीला कंवर की अध्यक्षता में आजादी का अमृत महोत्सव देश भक्ति के गीतों व नृत्यों से ओतप्रोत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ मनाया गया। महापौर ने समारोह में कहा कि देश को आजादी व तिरंगा हमें बहुत संघर्ष व कुर्बानियों से मिला है।

तिरंगा रैली का फूलों से स्वागत

हनुमानगढ़, (कासं)। जिले की पीलीबंगा तहसील के बहलोल नगर में नवयुवक संस्था के तत्वावधान में आजादी के अमृत महोत्सव अभियान के तहत तिरंगा रैली का आयोजन किया गया।

जय जवान- जय किसान, भारत माता की जय और वंदे मातरम के जोशीले नारों के साथ रैली की शुरूआत की गई। गांव के मुख्य रास्तों, गवाड़, चौराहों से गुजरती तिरंगा रैली का ग्रामीणों ने पुष्प वर्षा और गुलाल उड़ाकर स्वागत किया। रैली के दौरान डीजे पर देशभक्ति गीत बजते रहे।

इससे पहले वार्ड नंबर 4 स्थित बाबा रामदेवजी के मंदिर के सामने तिरंगा रैली के लिए लोग जुटे। इस दौरान सरपंच गुरलाल सिंह, डायरेक्टर घेरूराम गोदारा, नवयुवक संस्था के संरक्षक मदनलाल मील आदि वक्ताओं ने ग्रामीणों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि लाखों वीर जवानों ने अपना बलिदान देकर हमें यह आजादी दिलाई है। अपने वीरों को याद करते हुए हमने आजादी के 75 साल पूरे किए हैं। रैली में गांव के पूर्व डायरेक्टर नेतराम गोदारा, पूर्व सरपंच आदराम लोहरा, पूर्व सरपंच नथूराम मलखट, देवेन्द्र मूंड, मनीराम गोदारा, बेगराज मूंड, पालसिंह, गोपीराम मलखट, राजेंद्र मूंड, भागीरथ मरूवा, संस्था अध्यक्ष नरेश वर्मा, कोषाध्यक्ष सुभाष गोयल, प्रवक्ता पूनमचंद शर्मा, संस्था मंत्री हरीश हैरी, प्रहलाद सेन, रोहिताश वर्मा, लालचंद मानव, बब्बू सिंह ढिल्लो, योगेश वर्मा, रवि इंदलिया, नितिन बंसल, लिखमाराम ओड, नरेन्द्र मूंड के अलावा बड़ी संख्या में महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग शामिल थे।

सार-समाचार

कुलरिया ने लम्पी की दवाईयां भेजी

बीकानेर, (कासं)। लम्पी स्किन डिजीज से ग्रसित गौवंश के उपचार के लिए भामाशाह नरसी कुलरिया की ओर से भिजवाई गई दवाईयां रविवार को अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) ओमप्रकाश की मौजूदगी में पशुपालन विभाग के अधिकारियों को सौंपी गई। उल्लेखनीय है कि भंवर, नरसी और पूनम कुलरिया द्वारा अपने पिता संत दुलाराम कुलरिया की सातवीं पुण्यतिथि के अवसर पर गौवंश के लिए 11 लाख रुपये की औषधियां देने की घोषणा की थी। इस श्रंखला में रविवार को लगभग 60 प्रतिशत दवाईयां उपलब्ध करवा दी गई। अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) ने बताया कि लम्पी स्किन डिजीज की वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर क्षेत्र के भामाशाहों से सहयोग की अपील की गई थी। इस पर भंवर, नरसी और पूनम कुलरिया ने अपने पिता की सातवीं पुण्यतिथि के अवसर पर यह सहयोग उपलब्ध करवाया। इस दौरान पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ वीरेन्द्र नेत्रा, पशुपालन विभाग के नोडल अधिकारी डॉ. मनोज कुमार तथा भामाशाह प्रतिनिधि मांगीलाल मौजूद थे।

बीकानेर गौरव अवार्ड से नवाजा

बीकानेर, (कासं)। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) की अधिकारी अनुप्रेरणा सिंह कुंतल को निर्विकल्प फाउंडेशन की ओर से यहां गजनेर पैलेस में आयोजित समारोह में 'बीकानेर गौरव' अवार्ड से सम्मानित किया गया। नोखा विधायक बिहारी लाल विश्नोई एवं अन्य अतिथियों ने उन्हें मोमेंटो, शॉल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर अभिनंदन किया। उन्हें यह सम्मान उनकी ओर से प्रशासनिक क्षेत्र में किए गए बेहतरीन कार्यों के लिए दिया गया है। कुंतल ने आज से तीन दशक पहले राज्य की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा में चयनित होकर क्षेत्र का नाम रोशन किया और तत्कालीन समय में छात्राओं के लिए प्रशासनिक सेवाओं में कैरियर बनाने के लिए प्रेरणास्रोत बनीं। उन्होंने अपने सेवा काल के दौरान पूर्ण समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठ भाव से कार्य कर अमिट छाप छोड़ी है। वर्तमान में बाल अधिकारिता विभाग में आयुक्त के पद पर कार्यरत कुंतल ने सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की निदेशक सहित कई महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं दी है।

तिरंगा यात्रा निकाली

बीकानेर, (कासं)। महात्मा गांधी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दक्षिण विस्तार पवनपुरी बीकानेर में तिरंगा यात्रा स्कूल प्रांगण से रवाना होकर पवनपुरी परिक्षत्र में देशभक्ति नारों से गुंजायमान होती वापस स्कूल परिसर में पहुंची। विद्यालय के समस्त उपस्थित बच्चों को तिरंगे झण्डे भाजपा लघु उद्योग प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक महावीर रांका द्वारा उपलब्ध करवाये गए। जिससे झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वाले परिवारों के घरों में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत तिरंगे झण्डे लहरा सकेंगे। तिरंगे झण्डे मिलने के साथ ही बच्चों के चेहरे खिल उठे तथा देश भावना के नारों से पूरा परिक्षेत्र गुंजायमान हो गया। सभी बच्चों ने सम्मान के साथ ध्वज फरहान व सम्मान के साथ रखने का संकल्प भी लिया। तिरंगा यात्रा में पार्षद पुनीत शर्मा, पार्षद जामनलाल गजरा, अरूण जैन, नृसिंह सेवग, संस्था प्रधान रचना गुप्ता, रवि आचार्य, अरविन्द सिंह शेखावत, मीना तनेजा, नीलम शर्मा, अरविन्द जैन, मोहम्मद रमजान आदि ने भाग लिया।

गड्ढे में गिरने से एक की मौत

सूरतगढ़, (कासं)। सूरतगढ़ उपखंड के गांव अमरपुरा जाटान की रोही में एक व्यक्ति की पानी से भरे गड्ढे में गिर जाने के कारण मौत हो गई। सूचना मिलने पर सदर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को ग्रामीणों की सहायता से बाहर निकाला। पुलिस के मुताबिक इस संबंध में मृतक देवीलाल के भाई शीशराम गणपतराम निवासी अमरपुरा जाटान ने मर्ग दर्ज करवाई। उसमें बताया गया कि भाई का पैर फिसलने से पानी के गड्ढे में गिर जाने के कारण मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि फिलहाल शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया है, वहीं मामले की जांच थाना के हेड कांस्टेबल राजेंद्र कुमार कर रहे हैं।

बीकानेर से नशीली गोलियां लाते हुए तीन तस्कर दबोचे

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिले के घड़साना इलाके में बीकानेर से नशीली गोलियां लाते तीन तस्करों को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

तस्कर कार में नशीली गोलियां लेकर बीकानेर जिले में छतरगढ़ इलाके से घड़साना की ओर आ रहे थे। इसी दौरान सूचना पर पुलिस ने नाकेबंदी करवाई और कार को रुकवा लिया। तलाशी लेने पर कार में 8750 नशीली गोलियां मिली। तस्कर अपने साथियों के साथ मिलकर इलाके में नशीली गोलियों की सप्लाई करता है। शनिवार को भी वह नशीली गोलियां लेकर निकला था।

पुलिस को दो एमएलडी बी की रोही में नशीली टेबलेट्स की तस्करी की जानकारी मिली थी। इस पर वहां नाका लगाया। इसी दौरान सामने से आती कार को रोका तो कार चालक और उसके साथी घबरा गए। पूछताछ में तस्कर ने अपना नाम अकरम शाह उर्फ नत्थूशाह पुत्र असवार शाह बताया। उसके दो अन्य साथी नरपत और भैरों हैं। कार की तलाशी लेने पर इसमें नशे में उपयोग होने वाली 8750 गोलियां मिली। पूछताछ में तस्करों ने बीकानेर से नशा लाने तथा इसे घड़साना में बेचने की जानकारी दी। पुलिस अभी इनसे नशे के मुख्य सप्लायर के बारे में जानकारी जुटा रही है। नशा बेचने में उपयोग की जा रही कार भी पुलिस ने जब्त कर ली है।

- पुलिस ने कार से 8750 नशीली गोलियां बरामद की
- छतरगढ़ से घड़साना में बेचने जा रहे थे,नाकेबंदी में पकड़े

शिक्षा मंत्री डॉ. कल्ला करेंगे झंडारोहण

बीकानेर, (कासं)। स्वतंत्रता दिवस का मुख्य समारोह सोमवार को डॉ. करणीसिंह स्टेडियम में आयोजित होगा। मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला प्रात: 9 बजे ध्वजारोहण करेंगे तथा परेड का निरीक्षण करते हुए मार्च पास्ट की सलामी लेंगे।

स्वतंत्रता दिवस पर होने वाले मार्च पास्ट में आरएसी की तीसरी व दसवीं बटालियन, राजस्थान पुलिस, राजस्थान महिला पुलिस, राजस्थान अरबन होमगार्ड्स, एनसीसी की सात राज. बटालियन महारानी सुदर्शना कन्या महाविद्यालय स्काउट, गाइड, बीबीएस तथा सोफिया स्कूल के कैडेट्स की टुकड़ियां शामिल होंगी।

राज्यपाल के संदेश का पठन अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) द्वारा किया जायेगा। राजस्थान पुलिस एवं एनसीसी की सातवीं राज. बटालियन के जवानों ने घुड़सवारी का हैरतअंगेज प्रदर्शन करेंगे। व्यायाम प्रदर्शन में बारह विद्यालयों के 440 विद्यार्थी भाग लेंगे।

ज्वैलर्स शॉप पर सात महीने बाद फिर चोरी करने पहुंचे चोर

बीकानेर, (कासं)। गंगाशहर स्थित एक ज्वैलरी शोरूम चोरों के निशाने पर है। सात महीने पहले जिस दुकान से चोर पांच किलो चांदी और पच्चीस ग्राम सोना उड़ा चुके थे, वहीं फिर चोरी का प्रयास किया।

गनीमत रही कि इस बार सीसीटीवी कैमरा और दुकान का ताला दोनों ही नहीं टूटे। हालांकि चोर इससे निराश नहीं हुए। उन्होंने पास ही स्थित एक रिहायशी मकान पर हाथ साफ कर लिया। करीब एक-दो घंटे चोर बेखौफ इस एरिया में काम करते रहे लेकिन पुलिस को भनक तक नहीं लगी। चोर सीसीटीवी कैमरे में कैद हो चुके हैं। उसी आधार पर पुलिस तलाश कर रही है।

इसी दुकान पर दूसरी बार चोरी का प्रयास हुआ है। पहली बार तो सफल हुए लेकिन इस बार नहीं। गंगाशहर में कान्हा ज्वैलर्स की दुकान पर चोरों ने 18 दिसम्बर 2021 की रात सेंधमारी की थी। तब भी सोना और चांदी चोरी हुए थे। इस बार दुकान मालिक रामकिशन सोनी ने मजबूत ताले लगाए थे जो काफी देर मशक्कत के बाद भी नहीं टूटे। इस पर चोर ने पास ही स्थित जगराम गोदारा के मकान पर हाथ साफ कर लिए। यहां चोरी हुए सामान की अब तक पुष्टि नहीं हुई है। जगराम के घर से पच्चीस हजार रुपए नगद और दो मोबाइल लेकर फरार हो गए।

चोरों ने कान्हा ज्वैलर्स पर लगे सीसीटीवी कैमरे को तोड़ने का प्रयास किया। एक कैमरे को तोड़ने की कोशिश दूसरे कैमरे में कैद हो गई। हालांकि चोर कैमरे को तोड़ नहीं सका। इसके बाद कान्हा ज्वैलर्स के ताले तोड़ने के लिए लोहे के एक सरिये का उपयोग किया। सरिये को ताले के बीच में डालकर काफी देर मोड़ा लेकिन मजबूत ताला टूटा नहीं। काफी देर कोशिश के बाद उन्होंने पास ही स्थित जगराम गोदारा के घर पर सेंधमारी की।

इसी शॉप पर दिसम्बर में पांच किलो चांदी और पच्चीस ग्राम सोना चोरी हुआ था। इसमें पुलिस ने चोरों को पकड़ लिया लेकिन बरामदगी नाम मात्र हो सकी। चोरों से महज आधा किलो चांदी मिली। जबकि शेष साढ़े चार किलो चांदी और पच्चीस ग्राम सोना अब तक बरामद नहीं हो सका। युवा अधिवक्ता अनिल सोनी का कहना है कि गंगाशहर में चोरियों की लगातार बढ़ती घटनाओं के बीच गश्त बढ़ाने की जरूरत है। चोर देर रात अपने काम को अंजाम देते हैं।

- एक कैमरे को तोड़ने की कोशिश दूसरे कैमरे में कैद हो गए
- ताला नहीं टूटा तो पास के घर में हाथ साफ किया

कार की टक्कर से बाइक सवार की मौत

अनूपगढ़, (कासं)। अनूपगढ़ के गांव 6 पी के पास शनिवार देर रात बाइक और कार की टक्कर में बाइक चालक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। दुर्घटना होने के बाद कार ड्राइवर कार छोड़कर फरार हो गया है।

शव को एम्बुलेंस की सहायता से राजकीय चिकित्सालय लाया गया। जहां चिकित्सकों ने व्यक्ति को मृत घोषित कर शव को मोर्चरी में रखवा दिया गया। मिली जानकारी के अनुसार निर्मल सिंह उर्फ मंगल सिंह पुत्र अवतार सिंह गांव रावला में अपने किसी रिश्तेदार से मिलने के लिए गया था और शनिवार देर रात बाइक पर रावला से वापस आ रहा था। जैसे ही निर्मल सिंह गांव 6 पी के पास पहुंचा उसकी बाइक सामने से आ रही कार से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि निर्मल सिंह की गिरते ही मौके पर मौत हो गई।

एसआई राम सिंह ने बताया कि मृतक के मोबाइल पर लगातार फोन आ रहे थे। मगर मोबाइल टूट जाने के कारण फोन कॉल रिसीव नहीं हो पा रही थी। मोबाइल की सिम दूसरे मोबाइल में डाली गई और कॉल रिसीव कर मृतक के परिजनों को इस घटना की जानकारी दी गई। जानकारी मिलने के बाद मृतक के परिजन भी राजकीय चिकित्सालय पहुंचे। पुलिस ने शव की शिनाख्त करवा कर शव मोर्चरी में रखवा दिया है।

- अनूपगढ़ के गांव 6 पी के पास हुआ हादसा

बीनानि BMC

Azadi Ka Amrit Mahotsav

नगर निगम बीकानेर

75वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं

राज्य व केन्द्र परवर्तित निम्नाकित योजनाओं का लाभ उठायें

- प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना
- इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारन्टी योजना
- इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना
- स्वच्छ भारत मिशन शहरी
- दीनदयाल अन्तयोदय शहरी आजीविका मिशन
- पी.एम.स्वनिधि योजना
- इन्दिरा रसोई योजना

अपील

- प्रतिबंधित पॉलिथीन थेलियों का उपयोग नही करें।
- सरकारी भूमि एवं रास्तों पर अतिक्रमण नही करें।
- जन्म-मृत्यु एवं विवाह पंजीयन अवश्य करवायें।
- घर का कचरा ऑटो टिप्पर में ही डालें।
- आम रास्तों पर कचरा ना फैलावें।

शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाये रखने में अपनी सक्रिय भागीदारी निभायें ।

समस्त पार्षदगण नगर निगम बीकानेर

आयुक्त
नगर निगम बीकानेर

महापौर
नगर निगम बीकानेर

बीएसएफ जवानों ने निकाली 130 किमी. बाइक रैली

बीकानेर,(कासं)। बीकानेर में बीएसएफ मुख्यालय से बाइक रैली का आयोजन किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत निकाली गई बाइक रैली में बीएसएफ के 1265 अधिकारी वह जवान मौजूद थे।

इस अवसर पर बीएसएफ डीआईजी पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ ने कहा कि पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। ऐसे में सीमा सुरक्षा बल भी सीमाओं की रक्षा करने के साथ अमृत महोत्सव में अपनी भागीदारी निभा रहा है। बीकानेर से खाजूवाला बॉर्डर तक 130 किलोमीटर की बाइक रैली का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सवा सौ से ज्यादा बाइकर्स शामिल हुए। यह रैली खाजूवाला में आम लोगों के बीच पहुंचकर देशभक्ति का संदेश देगी। वहीं बॉर्डर पर फेंसिंग के पास पेट्रोलिंग भी करेगी। स्वतंत्रता दिवस पर खाजूवाला में पहली बार बीएसएफ ग्राउंड में 100 फीट के तिरंगे का ध्वजारोहण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि सीमा सुरक्षा बल का हर जवान व अधिकारी देश के लिए कुछ भी कर गुजरने के लिए हमेशा तत्पर है।

- बीकानेर से खाजूवाला बॉर्डर तक रैली निकाली

बीकानेर में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत बीएसएफ जवानों ने बाइक रैली निकाली।

जान जोखिम में डालकर बनास नदी से गुजर रहे ग्रामीण

सुरक्षा को लेकर कोई पुख्ता इंतजाम नहीं

राजसमंद, (निसं)। मोही राज्यावास मार्ग पर स्थित बनास नदी में इन दिनों तेज गति से पानी की बढ़ती आवक के साथ ही पानी पुलिया के उपर से बह रहा है। इसके बाद भी लोग अपनी जान जोखिम में डालकर पुलिया पर बह रहे पानी से होकर गुजरने की होड में लगे हुए हैं।

शनिवार शाम को नंदसमंद बांध के गेट खोलने के बाद पानी की आवक और अधिक तेज हो गई है। ऐसे में लोगों का पुलिया पर तेज गति से बहते पानी में से गुजरना किसी खतरे से खाली नहीं है। दुपहिया वाहन व चौपाहिया वाहन चालकों के अलावा लोग पैदल भी पुलिया पर बहते पानी से गुजर रहे हैं लेकिन पंचायत और प्रशासन द्वारा लोगों की सुरक्षा को लेकर ना तो वहां कोई साइन बोर्ड लगाया गया है और ना ही कोई गार्ड या जवान तैनात किया गया है।

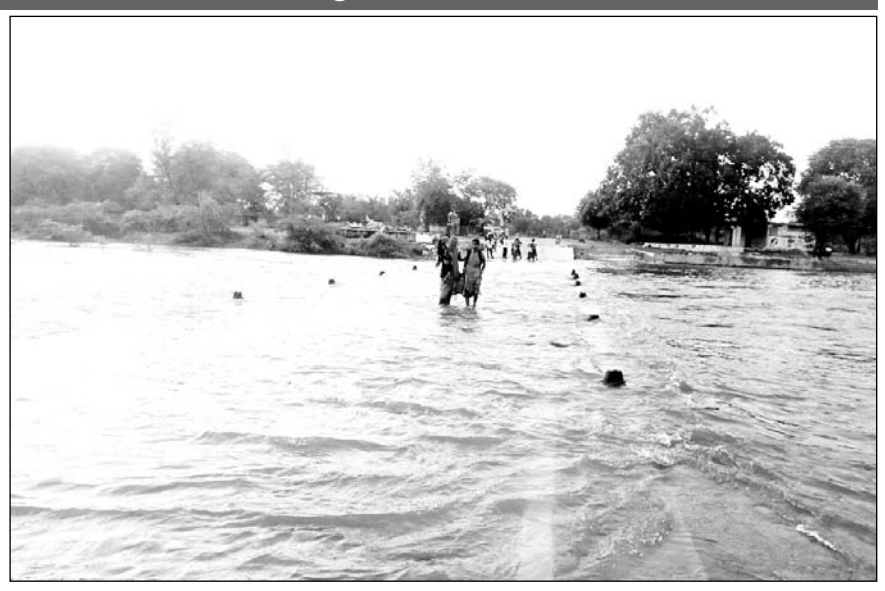

राजसमंद, मोही-राज्यावास मार्ग पर स्थित बनास नदी की पुलिया पर बहते पानी से गुजरते ग्रामीण।

लड़की को किडनैप करने वाले परिवार के तानों से आहत होकर पिता ने सुसाइड किया

किडनैप करने वाले युवक और परिवार पर ताने मारने का आरोप, मामला दर्ज

हनुमानगढ़, (निसं)। लड़की को किडनैप करने वाले युवक और उसके परिवार के सदस्यों के तानों और धमकियों से परेशान होकर लड़की के पिता ने सुसाइड कर लिया। हनुमानगढ़ के टिब्बी पुलिस थाना क्षेत्र के गांव नाईवाला से करीब दो महीने पहले लड़की को किडनैप करने के मामले में नया मोड़ आ गया है। लड़की के पिता ने जहरीली वस्तु खाकर सुसाइड कर लिया। परिजनों का आरोप है कि लड़की को किडनैप करने वाले युवक और उसके परिवार के सदस्यों ने लड़की के पिता को ताने मारे और धमकियां दी थी। इस संबंध में शुक्रवार को टिब्बी पुलिस थाने में मामला दर्ज हुआ है।

सूरेवाला चौकी प्रभारी किशोर सिंह ने बताया कि ढाणी 1 एसआरडबल्यू, नाईवाला निवासी एक व्यक्ति ने बताया कि उसके भाई की लड़की को करीब दो महीने पहले लवप्रीत पुत्र चन्द सिंह मजहबी निवासी ढाणी 1 एसआरडबल्यू नाईवाला भगाकर ले गया था। उसी दिन से लवप्रीत का ताऊ बलविन्द्र सिंह पुत्र बन्सा सिंह, चाचा लखवीर सिंह पुत्र बन्सा सिंह मजहबी आए दिन लड़की को लवप्रीत की ओर से भगाकर ले जाने के लिए ताने मारते थे और धमकी देते थे कि उनकी लड़की को उनके घर के पास उनके सामने ही बसाएंगे। उसके भाई और उन्होंने कई बार इन लोगों को समझाया, लेकिन वे नहीं माने और उसके भाई को ताने और धमकियां देकर परेशान करते रहे।

उसका भाई गुरुवार को चक 1एसआरडबल्यू खेत में दिहाड़ी पर गया। शाम करीब 4 बजे उसका भाई खेत के पास फिरनी के रास्ते पर बेहोश मिला। उसके भाई ने किसी जहरीले पदार्थ का सेवन किया था। वे उसे तत्काल हनुमानगढ़ टाउन के जिला अस्पताल लेकर गए। वहां इलाज के दौरान उसके भाई की मौत हो गई। उसके भाई ने लवप्रीत, बलविन्द्र सिंह, लखवीर सिंह आदि के खिलाफ मामला दर्ज कराया । पुलिस ने लवप्रीत सिंह, उसके ताऊ व चाचा के खिलाफ सुसाइड के लिए दुष्प्रेरित करने के आरोप में मामला दर्ज किया है।

अजमेर दरगाह के बाहर 786 तिरंगे बांटे

अजमेर, (कासं)। ख्वाजा साहब की दरगाह के बाहर 786 तिरंगों का वितरण हुआ। मदरसे की बच्चियों ने देशभक्ति के तराने पेश किए। अजमेर विश्व विख्यात सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह के बाहर रविवार को देशभक्ति का माहौल देखने को मिला। मौका था स्वतंत्रता दिवस से एक दिवस पूर्व 786 तिरंगों के वितरण का।

तिरंगा वितरण कार्यक्रम के संयोजक नवाब हिदायत उल्ला ने बताया कि हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस से एक दिवस पूर्व ख्वाजा साहब की दरगाह के बाहर तिरंगा वितरण का कार्यक्रम किया जाता है। आजादी के अमृत महोत्सव को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष 786 तिरंगा का वितरण किया गया । इसके पीछे मूल उद्देश्य यह रहा कि जिस तरह से यह संख्या हमारे धार्मिक महत्व की है उसी के अनुसार हम अपने देश को भी और प्रेम करते हैं। कार्यक्रम में अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट शहर भावना गर्ग, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव रामपाल जाट, स्थानीय क्षेत्रवासी और जायरीन को तिरंगे वितरित कर राष्ट्रीय पर्व और अमृत महोत्सव की जानकारी दी और प्रेरित किया । उन्होंने अपने घरों पर तिरंगा फहरा कर राष्ट्रीय पर्व को हर्षोल्लास से मनाने की अपील की ।

कार्यक्रम में मोहम्मद शब्बीर खान, अंजुमन सदस्य सैयद फजले हसन चिश्ती, हाजी सरवर सिद्दीकी, मौलाना अयूब कासमी, पीर नफीस मियां चिश्ती, ज़िला बार एसोसिएशन के सदस्य हाजी फय्याज उल्ला, पार्षद मौहम्मद शाकिर, बोहरा समाज के मोहम्मद अली बोहरा, शब्बीर अली शेख हातिम, आरिफ हुसैन, सलमान खान, कयूम खान, अब्दुल नईम खान, अकबर हुसैन भूपेंद्र चौहान, दिलीप शामनानी, जोधा टेकचंदानी, मास्टर अताउर रहमान, साकिब, अल्लादीन, मौलाना मोहसिन, अलाउद्दीन, सलमान, उस्मान घड़ियाली समेत कई लोग मौजूद रहे।

दरगाह के मुख्य द्वार पर मदरसे की छात्राओं ने देश भक्ति के गीत गाये।

जयपुर से मालपुरा पहुंची साईकिल तिरंगा यात्रा

मालपुरा, (निसं)। भारत की आजादी के 75वर्ष पूर्ण होने पर राजस्थान रोड राईडर्स संघ व प्रियंका हार्ट केयर फाण्डेशन के संयुक्त तत्वधान में जयपुर के अमर जवान ज्योती सर्किल से बीसलपुर के लिए रवाना हुई अभिनव साईकिल तिरंगा यात्रा के मालपुरा पहुंचने पर रेखा देवी नर्सिंग कॉलेज व अल्पसंख्यक सदभावना समिति सहित दर्जनों संगठन व सर्वसमाज के लोगों ने भव्य स्वागत किया।

- **150 साईक्लिस्टो के दल ने जयपुर से बीसलपुर 147 किमी. साईकिल चला दिया राष्ट्रभकित संदेश**

रविवार को प्रात: 5 बजे रवाना हुई साईकिल तिरंगा यात्रा का जयपुर से बीसलपुर तक सैकड़ों जगह पुष्प वर्षा भव्य स्वागत किया गया । अविकानगर फार्म हाऊस पर एडवोकेट रवि कुमार जैन, पार्षद डॉ. अंकित जैन, रमेश पारीक, जयपुर रोड पर च्यवन गौड ब्राह्मण समाज, विप्र युवा परिषद, एसडीएम रामकुमार वर्मा, एएसपी राकेश कुमार बैरवा, डीवाईएसपी सुशील मान, एसएचओ कैलाश विश्नोई, टोडारोड पर अल्पसंख्यक सदभावना समिति के अस्फाक नकवी, आफाक, पार्षद हमीद, आरिफ पीटीआई आदि ने भव्य स्वागत किया। साईकिल तिरंगा रैली मे प्रदेश के विशेषज्ञ चिकित्सक, प्रशासनिक अधिकारी एवं न्यायिक अधिकारी महिला अधिकारी, जाने-माने लेखक, शामिल रहे।

गांव स्यालोदड़ा में लम्पी स्किन डिजीज का आइसोलेशन सेंटर शुरू

व्यापार कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सुरेश मोदी की मौजूदगी में लम्पी स्किन डिजिज को लेकर बैठक हुई।

- **राजस्थान व्यापार कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सुरेश मोदी ने सेंटर में उपचाराधीन गोवंश का निरीक्षण किया**
- **सुरेश मोदी ने बीमारी में दवाइयों, वेक्सीन व अन्य राहत कार्यों के लिए विधायक कोटे से 5 लाख रूपये जिला कलेक्टर को दिए**

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम स्यालोदड्डा में लंपी स्किन डिजीज आइसोलेशन सेंटर का विधिवत रूप से उद्घाटन एवं जागरूकता सभा का आयोजन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल प्रांगण में किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि नीमकाथाना विधायक एवं राजस्थान व्यापार कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सुरेश मोदी ने सेंटर में उपचाराधीन गोवंश का निरीक्षण किया और कार्यक्रम में उपस्थित लोगो को इस बीमारी के प्रति जागरूक करने एवं बीमार गोवंश के चारा पानी, संतुलित आहार व दवाइयों तथा अन्य सहयोग की अपील की ।

सुरेश मोदी ने बीमारी में दवाइयों, वेक्सीन व अन्य राहत कार्यों के लिए विधायक कोटे से 5 लाख रूपये जिला कलेक्टर को देने हेतु घोषणा के साथ साथ 5100 रूपये की राशि आइसोलेशन सेंटर में व्यवस्थाओं के लिए दिए ।

मोदी से प्रेरित होकर उपखण्ड अधिकारी ब्रजेश कुमार गुप्ता, तहसीलदार मुनेश कुमार सिर्वा ने 5100 -5100, पूर्व प्रधान कांता प्रसाद शर्मा ने 5 कट्टे पशु आहार, ब्लॉक अधिकारी डॉ रणजीत मेहरानिया ने 10 मण तुड़ी व पूर्व सरपंच बाबूलाल ने 50 किलो बाजरा तथा अनिल कुमार शर्मा सरपंच स्यालोदड्डा, सत्यवीर यादव बिहार, दिपेन्द्र कुमार बिहार, टिंकू कुमार मीणा पटवारी, हरिराम यादव ठाम विकास अधिकारी, सत्यप्रकाश मीणा प्राचार्य व सज्जन कुमार अध्यापक ने 2100-2100, रामेश्वर लाल सैनी ने 1000, बनवारीलाल बल्दोदिया, नूर मोहमद खान, अमर सिंह धानका व घासीराम सिरोहीवाल ने 500-500 रूपये का सहयोग आइसोलेशन सेंटर के लिए प्रदान किया । इस दौरान वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ रामावतार बॉयला, पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ अशोक कुमार यादव, डॉ योगेश आर्य, पशुधन सहायक सुनील कुमार सैनी, विक्रम सिंह, विरेन्द्र कुमार पुनिया व सत्यवीर यादव तथा कमल सैनी, अभिषेक कौशिक, दिनेश शर्मा, सुभाष सैनी सहित कई सक्रिय सदस्य उपस्थित रहे विधायक मोदी ने श्री कृष्ण गौशाला डाबला का भी निरिक्षण किया।

तिरंगे का अपमान करने का मामला, गोली मारने की धमकी दी

मालपुरा, (निसं)। अतिसंवदेनशील मालपुरा शहर में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का अपमान करने का उलाहना देने पर आरोपियों ने भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष नजरूदीन देशवाली के साथ मारपीट कर काफिर जैसे शब्दों से लज्जित करते हुए गोली मारने की धमकी देने के बाद पीड़ित नजरूदीन ने मालपुरा थाने में आरोपी असलम सहित आधा दर्जन से अधिक जनों के विरूद्ध मामला दर्ज करवाया ।

पीड़ित नजरूदीन ने दी रिपोर्ट में बताया कि 13 अगस्त की दोपहर बाद वो ट्रक स्टैण्ड पुलिया के पास अपनी टायर पंचर की दुकान पर बैठा था। दुकान के बाहर खड़ी एक गाडी पर तिरंगा लगा हुआ था। मोटरसाईकिल पर सवार हो उसकी दुकान के सामने रूके असलम पुत्र अन्नु निवासी मालपुरा ने रूकते हुए गाड़ी पर लगे तिरंगे को हटाकर जमीन पर फैंक दिया जिसका उलाहना देने पर असलम ने उसके साथ गाली-गलोच करते हुए काफिर जैसे शब्दों से लज्जित किया। कुछ ही देर बाद असलम ने फोन कर 8-10 जनों को वहां पर बुला लिया व गाली-गलौच करते हुए मारपीट शुरू कर दी। बीच-बचाव करने आये रफीक, नूर व शमशुदीन से भी असलम व उसके साथियों ने मारपीट की।

नजरूदीन के थाना पुलिस को सूचना देने पर मारपीट करने वालों ने कहा कि पुलिस हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती है। तुझे तो हम शाम पहले गोली मार देगें यह कहकर मौके से फरार हो गये। मारपीट के बाद जान से मारने की धमकी से सहमे नजरूदीन ने सम्पूर्ण घटनाक्रम से भाजपा पदाधिकारियों को अवगत करवा थाना पुलिस पहुंच असलम के विरूद्ध नामजद तो आधा दर्जन से अधिक अन्य लोगों के विरूद्ध लिखित रिपोर्ट दी ।

पीड़ित नजरूदीन देशवाली।

- **मालपुरा थाने में पीड़ित ने कराया मामला दर्ज**

राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के अपमान व अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष को गोली मारने की घटना को लेकर मालपुरा टोडारायसिंह विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने प्रेस नोट जारी कर कहा कि राष्ट्रीय ध्वज को अपमानित करने के उद्देश्य से उसे जमीन पर फैंकने जैसी घटना को किसी भी हाल में बर्दास्त नहीं किया जायेगा। इस घटना से शहर के हर एक नागरिक में गहरा रोष व्याप्त है। ऐसे असामाजिक तत्व एवं शहर का साम्प्रदायिक सौहार्द व कानून व्यवस्था बिगाड़ने वाले अपराधियों की तत्काल गिरफ्तारी व उचित कार्यवाही नहीं की गई तो वो स्वयं आमजन के साथ सड़कों पर उतर उग्र आंदोलन करेंगे।

पर्वतारोही बिजेन्द्र सैनी का स्वागत

कोटपूतली, (निसं)। कोटपूतली निवासी पर्वतारोही बिजेन्द्र कुमार सैनी अपनी ड्रीमलैंड एडवेंचर टीम के साथ हर घर तिरंगा अभियान को जन जन तक पहुंचाने के लिए जयपुर से साईकिल पर तिरंगा लेकर 13 अगस्त को दिल्ली के लिए रवाना हुए। जिनका रविवार को कोटपूतली पहुंचने पर भाजपा नेता व कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। बिजेन्द्र सैनी के साथ उनके टीम के सदस्य रूपसिंह, बब्लू, श्रीराम थे। भाजपा नेता मुकेश ने बताया कि बिजेन्द्र सैनी अपनी टीम के साथ 15 अगस्त को इण्डिया गेट दिल्ली स्थित शहीद स्मारक पर तिरंगा लगाकर शहीदों को श्रृद्धांजलि देकर इस साईकिल यात्रा को पूरा करेंगें।

रसद विभाग ने 12 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए

पोकरण, (निसं)। रामदेवरा कस्बे में रसद विभाग ने कार्यवाही करते हुए 12 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए ।

रसद विभाग के प्रवर्तन निरीक्षक गोविंद देथा और अशोक कुमार ने स्थानीय पुलिस के साथ सघन अभियान चलाते हुए घरेलू गैस सिलेंडर उपयोग को रोकने और अवैध रूप से बेचे जा रहे पेट्रोल डीजल को रोकने हेतु छापामारी की कार्यवाही की गई। कार्यवाही के दौरान अलग - अलग व्यवसायिक प्रतिष्ठानों से 12 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए गए एवं संपूर्ण रामदेवरा के व्यवसायिक प्रतिष्ठानों की जांच की गई। प्रवर्तन निरीक्षक ने बताया कि मेला अवधि के दौरान इस प्रकार की कार्यवाही आगे भी जारी रहेगी।

इस विषय में सभी व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को स्पष्ट रूप से पाबंद किया गया कि वे व्यवसायिक गैस सिलेंडर का उपयोग करना सुनिश्चित करें। भाव पटिका लगाना सुनिश्चित करें और खाद्य पदार्थों को उचित दशा में रखे व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर घरेलू गैस सिलेंडर का उपयोग तथा अवैध रूप से पेट्रोल डीजल की बिक्री आवश्यक वस्तु अधिनियम का उल्लंघन है।

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने धौलपुर शहर में निकाली तिरंगा यात्रा

धौलपुर, (निस)। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने रविवार को धौलपुर शहर में बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं के साथ तिरंगा यात्रा निकाली। वे करीब 4:30 बजे काफिले के साथ निज निवास राज निवास पैलेस से वाहनों के काफिले के साथ निकली। सबसे पहले वे गुलाब बाग चौराहा होते हुए जगदीश टॉकीज धौलपुर स्थित विशम्भर अग्रवाल और समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति कई बार सरपंच रहे रनवीर सिंह परमार के यहां पहुंची, जहां पूर्व मुख्यमंत्री राजे ने उनके हालचाल जाने और तिरंगा भेंट किया। साथ ही घरों पर तिरंगा लगाने के लिए प्रेरित किया।

आपको बता दें कि पूर्व सरपंच रनवीर सिंह परमार जिला अस्पताल धौलपुर के पीएमओ डॉ. समरवीर सिंह सिकरवार के पिता है । इसके बाद राजे बस स्टैंड धौलपुर स्थित पूर्व नगरपालिका चेयरमैन रघुवीर सिंह चौधरी के घर पहुंची। यहां पर तिरंगा भेंट किया। इसके बाद संतर रोड, पुरानी सब्जी मंडी, हनुमान तिराहा, लाल बाजार, सराय गजरा, जगन चौराहा एवं दशहरा रोड होते हुए नगर परिषद धौलपुर के नेता प्रतिपक्ष अकील अहमद के घर पहुंची, जहां अकील अहमद की पार्षद बहन राबिया और बेटी लायवा ने चुनरी औढ़ा कर और फूल माला पहनाकर राजे का भव्य स्वागत किया। यहां भी राजे ने तिरंगा भेंट किया और घरों पर तिरंगा लगाने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद राजे राधा बिहारी मंदिर पहुंची, जहां उन्होंने भगवान के दर्शन कर पूजा-अर्चना की और प्रदेश की सुख शांति एवं समृद्धि की कामना की। इसके बाद वे सिटी पैलेस पहुंची। जहां उन्होंने कार्यकर्ताओं का अभिवादन किया ।

यात्रा के दौरान भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष बहादुर सिंह त्यागी, पूर्व मंत्री जगमोहन सिंह बघेल, पूर्व जिला प्रमुख डॉक्टर धर्मपाल सिंह जादोन, राजकीय संवेदक मुरारी लाल सिंघल, आरपीएससी के पूर्व चेयरमैन डॉक्टर आर एस गर्ग, सभापति प्रतिनिधि निशांत सिंह, शरीफ खान एडवोकेट, पूर्व चेयरमैन रघुवीर सिंह चौधरी, नेता प्रतिपक्ष अकील अहमद, शैलेंद्र यादव, अविनाश शर्मा रिंकू, पूर्व विधायक रानी कोली, गुड्डी मौर्य, पूर्व विधायक शिवराम कुशवाह, पार्षद जय शिव राना, राम शर्मा, विवेक शर्मा, वीरेंद्र सिंह, मदन कोली, दिनेश चौधरी, रनवीर डंडोतिया, जाहिद कुरैशी, संजय त्रिवेदी, पवन शर्मा, भोल, विशाल सिंघल, हेम सिंह बघेला, अशोक पचौरी, पूर्व सरपंच मुकेश शर्मा, सरपंच रामवीर त्यागी सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

दुष्यंत ने दिखाई ट्रेन को हरी झंडी

कोटा, (निसं)। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की वर्चुअल उपस्थिति में ट्रेन नं. 05837/05838 कोटा-झालावाड़ सिटी-कोटा सवारी गाड़ी का जूनाखेड़ा तक विस्तारीकरण का शुभारम्भ दुष्यंत सिंह सांसद लोक सभा, झालावाड़-बारां के कर कमलों द्वारा रविवार को प्रात: 10 बजे झालरापाटन रेलवे स्टेशन पर किया गया।

कार्यक्रम में गोविन्द रानीपुरिया विधायक मनोहरथाना, नरेन्द्र नागर विधायक खानपुर और कालूराम मेघवाल विधायक डग भी उपस्थित रहे। अब तक यात्रियों के लिए यह रेल सेवा झालावाड़ सिटी तक थी जिसको विस्तारित कर जूनाखेड़ा तक किया गया है। झालरा पाटन से जूनाखेडा को जाने सवारी गाड़ी 14 अगस्त को दुष्यंत सिंह सांसद लोक सभा, झालावाड़-बारां, मंडल रेल प्रबंधक, कोटा पंकज शर्मा एवं अन्य गणमान्य द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। कोटा-जूनाखेडा-कोटा के मध्य प्रतिदिन गाड़ी संख्या 05838 / 05837 पैसेंजर ट्रेन सेवा 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नियमित रूप से चलेगी। इस पैसेंजर में कुल 10 कोच होंगे गाड़ी संख्या 05838 कोटा से प्रतिदिन सुबह 06.45 बजे प्रस्थान कर जूनाखेड़ा 09.40 बजे पहुंचेगी तथा गाड़ी संख्या 05837 जूनाखेड़ा से प्रतिदिन सुबह 10.05 बजे प्रस्थान कर दोपहर 12.55 बजे कोटा आएगी। रेल प्रशासन द्वारा गाड़ी की समय सारणी जारी कर दी गई है जिसे ऑनलाइन माध्यम से भी यात्रियों द्वारा देखा जा सकता है।

पिटाई से दलित छात्र की मौत का मामला, प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने भांजी लाठिया

प्रदर्शनकारियों के पथराव करने के बाद पुलिस ने हल्का बल प्रयोग कर खदेड़ा

सायला, (निसं)। जालोर जिले के सायला पुलिस थानाक्षेत्र के सुराणा गांव में एक अध्यापक की पिटाई के बाद दलित छात्र की मौत होने पर रविवार को माहौल तनावपूर्ण हो गया। सैकड़ों की संख्या में जमा प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर पथराव कर दिया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियो पर हल्का बल प्रयोग कर खदेड़ा । शाम को अंतिम दौर की वार्ता हुई। जिसमें पांच लाख रुपये मुख्यमंत्री राजकोष से देने सहित जिला कलैक्टर निशांत जैन ने आठ लाख रुपये की आर्थिक सहायता सरकारी योजनाओं से देने व मृतक छात्र परिजनों की जायज मांगों को राज्य सरकार को भेजने पर मामला शांत हुआ।

जालोर जिले के सुराणा ग्राम में इन्द्र कुमार पुत्र देवाराम प्यास लगने पर विद्यालय में मटके से पानी पी लिया । जिस पर अध्यापक छैलसिंह ने इन्द्र कुमार को जातिसूचक शब्दों से अपमानित किया तथा थप्पड मारा। जिससें वह घायल हो गया जिसकी शनिवार को मौत हो गई।

शनिवार को हुए पुलिस लाठीचार्ज में मृतक छात्र के मामा समेत 5-6 लोगों को चोटें आई हैं। मामला बिगडने की आशंका के चलते प्रशासन ने अगले आदेश तक सुबह से ही जिले में इंटरनेट सेवा बंद कर दी। साथ ही शांति व्यवस्था को लेकर मृतक छात्र के परिजनो की सुरक्षा के लिए बडी संख्या में पुलिस जाब्ता भी तैनात कर दिया।

सायला के निकट सुराणा में दलित छात्र के मौत के मामले में पुलिस ने समझाइश की।

लाठीचार्ज के बाद एक बार फिर प्रशासन द्वारा परिजनों के साथ मांगों को लेकर वार्ता की गई। शाम को करीबन सवा सात बजे कुछ मांगों पर सहमति बनी। वार्ता में जिलाकलेक्टर द्वारा मांग स्वीकार करने व कुछ मांगों की अनुशंषा राज्य सरकार को भेजने पर परिजन मृतक छात्र के अंतिम संस्कार के लिए सहमत हुए। इस दौरान जिला कलक्टर निशांत जैन एवं पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाला ने जीवाणा पुलिस चौकी में कानून व्यवस्था का जिम्मा संभाल रखा था। मौके पर एएसपी डॉ. अनुकृति उज्जैनियां, सीईओ संजय वासु, जालोर वृताधिकारी हिम्मत चारण, जालोर कोतवाली सीआई अरविन्द पुरोहित, सायला थानाधिकारी धूवप्रसाद समेत विभिन्न थानों के थानाधिकारी व पुलिस जाब्ता तैनात रहा।

- **मामला बिगड़ने की आशंका के चलते प्रशासन ने अगले आदेश तक सुबह से ही जिले में इंटरनेट सेवा बंद कर दी**

घटना को लेकर जालोर पूर्व विधायक रामलाल मेंघवाल, पूर्व जिला प्रमुख मंजू मेंघवाल भी उपस्थित रही। प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मृतक दलित छात्र के परिजनों को पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है। साथ ही कहा कि घटना लिप्त आरोपी शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया गया।

युवक ने रिवॉल्वर से खुद के सिर में गोली मारकर आत्महत्या की

- पलंग पर खून से लथपथ लाश मिली, पुलिस ने कमरे का दरवाजा तोड़कर शव बाहर निकाला
- भांकरोटा में बिंदायका स्थित सीकेडी हाईट्स में किराये से पत्नी व बच्चों के साथ रहता था मृतक

जयपुर (कासं)। राजधानी के भांकरोटा इलाके में शनिवार रात युवक ने लाइसेंसी रिवॉल्वर से खुद को गोली मारकर सुसाइड कर लिया। कनपटी पर गोली मारने से कमरे में खून ही खून हो गया। गोली चलने की आवाज से अपार्टमेंट में दहशत फैल गई। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। भांकरोटा थाना पुलिस ने लोगों की मदद से गेट को धक्का देकर खोला। कमरे में बेड पर खून से लथपथ लाश पड़ी मिली। पुलिस ने एफएसएल टीम की मदद से मौके से सबूत जुटाए है। पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए शव हॉस्पिटल की मॉच्यूरी में रखवाया है।

पुलिस के मुताबिक गंगानगर निवासी कुलदीपेंद्र सिंह (45) ने सुसाइड किया है। उसका खेती-बाड़ी का काम था। वह बिंदायका स्थित सीकेडी हाईट्स में किराए के फ्लैट में पत्नी और बेटा-बेटी के साथ रहता था। रात करीब 11:30 बजे वह अपने रुम में गया। रुम को अंदर से लॉक कर लिया। कुछ देर बाद ही गोली चलने की आवाज आई। गोली चलने की आवाज से अपार्टमेंट में रहने वाले लोगों में दहशत फैल गई। पत्नी और बच्चों ने कुलदीपेंद्र को आवाज लगाकर रुम खटखटाया, लेकिन अंदर से कोई जबाव नहीं मिला। आसपास के लोग भी मौके पर पहुंच गए। लोगों की सूचना पर भांकरोटा थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने धक्का देकर गेट को खोला। रुम में पलंग पर कुलदीपेंद्र की लाश पड़ी हुई थी। कुलदीपेंद्र ने अपनी लाइसेंसी रिवॉल्वर से खुद को कनपटी पर शूट किया था। पुलिस प्रथमदृष्टया जांच में सामने आया है कि कुलदीपेंद्र मानसिक रुप से बीमार था, उसकी दवाईयां भी चल रही थी। शनिवार रात करीब 8 बजे से वह शराब पी रहा था। रात करीब 11:15 बजे पत्नी ने उसको खाने की पूछा। खाना खाने से मना कर वह अपने रुम में चला गया। जिसके बाद खुद को गोली मारकर सुसाइड कर लिया। पुलिस ने मौके पर मिली लाइसेंसी रिवॉल्वर जब्त कर ली है। मृतक के पास किसी प्रकार का सुसाइड नोट मिलने की बात से इंकार किया गया है। बताया जा रहा है कि मृतक का बेटा भी मानसिक रूप से कमजोर है। बच्चों की पढ़ाई के लिए 4 महीने पहले जयपुर शिफ्ट हुआ था। एक बेटा 14 साल का है। बेटी 10 साल की है। घर में पत्नी जागृती (43) और एक नौकर भी था।

एसएमएस स्टेडियम में होगा स्वतंत्रता दिवस का राज्य स्तरीय समारोह

जयपुर (कासं)। एसएमएस स्टेडियम में सोमवार को स्वतंत्रता दिवस पर राज्य स्तरीय समारोह मनाया जाएगा। जिसके लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। कड़ीह सुरक्षा व्यवस्था के बीच प्रदेशभर में 15 अगस्त के अनेक कार्यक्रम होंगे। इस बीच राज्य सरकार ने विभिन्न जेलों में सजा काट रहे 51 कैदियों को उनके आचरण को देखते हुए स्वतंत्रता दिवस पर समय पूर्व रिहा करने का फैसला किया है। समारोह में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी जाएंगी। राज्य भर में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए है। आवश्यकतानुसार अति. पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है। रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों व अन्य सार्वजनिक स्थानों पर किसी भी संदिग्ध गतिविधि की निगरानी के लिए चौकसी बढ़ा दी गई है। पुलिस की ओर से प्रदेशभर में जगह जगह वाहनों की जांच की जा रही है।

डॉ. पूनिया ने हजारों महिलाओं को तिरंगा झंडा वितरित किया

प्रदेश महामंत्री और सांसद दीया कुमारी समेत हजारों महिलाओं ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष को रक्षासूत्र बांधे

आमेर विधानसभा क्षेत्र में रविवार को आयोजित तिरंगा-राखी संगम कार्यक्रम में जनसैलाब उमड़ा।

जयपुर (कासं)। आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आहवान पर जयपुर सहित राजस्थान के सभी जिलों में हर घर तिरंगा अभियान पूरे जोर-शोर और उत्साह के साथ चल रहा है। इसी क्रम में आमेर विधानसभा क्षेत्र में आज तिरंगा राखी संगम कार्यक्रम में हजारों महिलाओं का जनसैलाब उमड़ा, जिसमें सभी महिलाओं को घरों पर तिरंगा लगाने के लिए तिरंगा वितरित किये गए और साथ ही प्रदेश महामंत्री एवं सांसद दीया कुमारी सहित हजारों महिलाओं ने डॉ. सतीश पूनिया को रक्षासूत्र बांधकर उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु और तरक्की की कामना की।

- आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में डॉ. सतीश पूनिया ने सुकन्या समृद्धि योजना में 75 कन्याओं के खाते खुलवाने का शुभारंभ किया

आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर मोदी सरकार की सुकन्या समृद्धि योजना के अर्न्तगत सतीश पूनिया ने राशि जमा करवाकर 75 कन्याओं के खाते खुलवाने का शुभारंभ किया और बेटियों के सशक्तिकरण के लिए सुकन्या समृद्धि योजना के खाते खुलवाने की लोगों से अपील भी की। डॉ. पूनिया ने संबोधित करते हुए कहा कि, चूरू जिले के एक छोटे से गांव में एक सामान्य किसान परिवार में जन्मे मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को यहां तक पहुंचाने में मातृशक्ति एवं बहन-बेटियों के आशीर्वाद और प्यार की बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि आमेर, जयपुर, राजस्थान की मजबूती एवं विकास के लिए 2023 में भाजपा की प्रचंड बहुमत की सरकार बनवाने में माता-बहनों का भरपूर आशीर्वाद मिलेगा और 2024 में श्री नरेन्द्र मोदी को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने में भी मातृशक्ति का हमेशा की तरह विशेष योगदान-आशीर्वाद रहेगा। डॉ. पूनिया ने महिला सशक्तिकरण एवं सम्मान के लिए केन्द्र सरकार की उज्जवला, सुकन्या इत्यादि जन-कल्याणकारी योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने का आमजन से आव्हान किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं सांसद दीया कुमारी, प्रदेश मंत्री महेन्द्र यादव, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता एवं विधायक रामलाल शर्मा, महिला मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष अलका मूंदड़ा, महिला मोर्चा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पूजा कपिल, महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री बादाम देवी वर्मा, जयपुर जिला प्रमुख रमा देवी, जयपुर ठोटर नगर निगम मेयर सौम्या गुर्जर, जयपुर देहात उत्तर जिलाध्यक्ष जितेन्द्र शर्मा, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष भगवान शर्मा, आमेर प्रधान बद्रीनारायण बागड़ा, जालसू प्रधान हरदेव यादव इत्यादि उपस्थित रहे।

लाहोटी ने किया पूर्व एयरवॉरियर्स का सम्मान

जयपुर (कासं)। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत 75 वां स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर सांगानेर विधानसभा के पार्षद भारती लाख्यानी द्वारा विधायक अशोक लाहोटी के नेतृत्व में पूर्व एयरवारियर्स का शॉल और प्रतीक तस्वीर भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर सम्मानित होने वाले प्रमुख रूप से वारियर्स एडवोकेट ओमप्रकाश श्योराण (महासचिव बार एसोसिएशन आर्म्ड फ़ोर्स ट्रिब्यूनल जयपुर), रोहिताश ओला रिटायर्ड एयरफोर्स, खेमचंद रेवाड़ एयरफोर्स, पूर्व सहायक आयकर आयुक्त, अमरसिंह सहु रिटायर्ड एयरफोर्स, भवानीशंकर शर्मा रिटायर्ड एयरफोर्स देवीलाल भामू रिटायर्ड एयरफोर्स सेवा को सम्मानित किया।

राजस्थान सब रीजनल इंफ्राट्रक्चर डवलपमेंट बोर्ड का गठन किया

जयपुर (कासं)। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) की क्षेत्रीय योजना 2041 में समाहित नीतियों एवं प्रस्तावों के क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकार ने राजस्थान सब रीजनल इन्फ्राट्रक्चर डवलपमेंट बोर्ड का गठन किया है। तिजारा विधायक संदीप कुमार को इसका अध्यक्ष मनोनीत किया है। इस संबंध नगरीय विकास विभाग ने रविवार को आदेश जारी कर दिये है।

दरअसल राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के राजस्थान उपक्षेत्र में अलवर एवं भरतपुर जिले शामिल है। दोनों जिलों एनसीआर में होने तथा यहां तेजी से हो रहे शहरीकरण व औधोगिकरण के कारण नगरीय क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों के संसाधनों एवं मूलभूत सुविधाओं पर दबाव है। इसके लिए सरकार ने सभी उत्तरदायी विभागों और निर्वाचित प्रतिनिधियों का एक संयुक्त प्लेटफार्म बनाया है, जो कि क्षेत्रीय विकास एवं समस्याओं के त्वरित समाधान के बारे में सुझाव देगा। इस बोर्ड में अध्यक्ष राज्य सरकार मनोनीत करेगी, सदस्यों में अलवर व भरतपुर कलक्टर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीडा भिवाड़ी, सचिव नगर विकास न्यास भरतपुर, अलवर, भरतपुर व भिवाड़ी निकाय आयुक्त तथा सदस्य सचिव मुख्य नगर नियोजक शामिल होंगे।

डॉ. प्रशाखा माथुर व प्रेम सिंह को मिलेगा राष्ट्रपति पुलिस पदक

जयपुर (कासं)। केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर राजस्थान के 2 पुलिस अधिकारियों को राष्ट्रपति पुलिस पदक और 16 पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को पुलिस पदक प्रदान करने की घोषणा की गयी है। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्टेट ह्यूमन राइट्स कमिशन जयपुर डॉ. प्रशाखा माथुर एवं पुलिस उप निरीक्षक पुलिस ट्रेनिंग स्कूल भरतपुर के प्रेम सिंह को राष्ट्रपति पुलिस पदक के लिए चुना गया है।

इसके अलावा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दूरसंचार राजस्थान दौलत राम अटल, पुलिस निरीक्षक एसओजी जयपुर विजय कुमार राय, पुलिस निरीक्षक दूरसंचार पुलिस मुख्यालय मनोज पारीक, थानाधिकारी उदय मंदिर पुलिस आयुक्तालय जोधपुर अमित सिंह सिहाग, पुलिस निरीक्षक राजस्थान पुलिस अकादमी नीलिमा अग्निहोत्री, पुलिस उप निरीक्षक यातायात जयपुर इंद्रा अहलावत, प्लाटून कमांडर 11 वीं बटालियन आरएसी आई आर वजीराबाद नई दिल्ली विद्याधर, सहायक उप निरीक्षक कार्यालय पुलिस उपायुक्त यातायात जयपुर अब्दुल सलीम खान, सहायक उपनिरीक्षक सीएम सिक्योरिटी विंग जयपुर मोहन सिंह, सहायक उपनिरीक्षक थाना शाहपुरा रामपाल मीणा, हैड कांस्टेबल आरपीए शिवराज, हैड कांस्टेबल एसडीआरएफ करण सिंह मीणा, हैड कांस्टेबल आरपीए राम नारायण जाट, हैड कॉन्स्टेबल नंबर 16 एटीएस जयपुर नरेंद्र कुमार शर्मा, कॉन्स्टेबल आरमोरर 151 कान सिंह एवं कॉन्स्टेबल नंबर 449 चतुर्थ बटालियन आरएसी जयपुर गोपाल राम मीणा को पुलिस पदक से सम्मानित किया जायेगा।

पंजाब नेशनल बैंक ने लगाई चित्र प्रदर्शनी

जयपुर (कासं)। पंजाब नैशनल बैंक जयपुर अंचल की ओर से भारत सरकार-प्रधान कार्यालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के तहत विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। इस बेहद ऐतिहासिक प्रदर्शनी का अनावरण विभाजन की त्रासदी के गवाह रहे 96 वर्षीय वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी कालिदास स्वामी ने किया। इस अवसर पर अंचल प्रबंधक आर.के.बाजपेयी, उप अंचल प्रमुख एन.आर. बंजारा, मण्डल प्रमुख रामकिशोर मीना, उप महाप्रबंधक नवीन चन्द्र पाण्डेय और मण्डल प्रमुख हरिमोहन मीना भी मौजूद थे। प्रदर्शनी के अनावरण के दौरान स्वतंत्रता सैनानी कालीदास स्वामी ने देश के विभाजन के दौरान अपने अनुभव एवं अपने मस्मृतियों को भी उपस्थित जन समूह के साथ साझा किया। अंचल प्रबंधक ने प्रेणास्पद उद्बोधन दिया।

सार-समाचार

पारीक परिषद् ने मनाया अमृत महोत्सव

जयपुर । देश की आन-बान शान का प्रतीक तिरंगा और तिरंगे के रंग में रंगी पारीक महिला परिषद की सदस्यों ने रविवार को आजादी का 75 वां अमृत महोत्सव बहुत ही उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर सदस्यों ने देशभक्ति गीत गए और देशभक्ति से सराबोर स्लोगन भी लिखें।

विश्व हिंदू परिषद की स्थापना पर चर्चा

जयपुर (कासं)। विश्व हिंदू परिषद स्थापना दिवस एवं स्वामी लक्ष्मणानंद बलिदान दिवस के एक सप्ताह तक चलने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला में रविवार को रीको आवासीय कॉलोनी स्थित सामुदायिक भवन में कार्यक्रम हुआ। विहिप प्रान्त धर्मप्रसार एवं सत्संग प्रमुख सीएम भार्गव के आतिथ्य, राजीव अग्रवाल के सान्निध्य तथा नरेन्द्रसिंह शेखावत की अध्यक्षता में यह समारोह संपन्न हुआ। यहां पर मुख्य अतिथि सीएम भार्गव ने विहिप स्थापना के तत्कालीन कारणों का उल्लेख करते हुए बताया कि स्वतंत्रता के बाद देश अपेक्षा के विरुद्ध दिशा में चल पड़ा था। सरकार की तुष्टिकरण नीति, ईसाइयों द्वारा धर्मांतरण, साम्यवादी विचारकों द्वारा बौद्धिक संस्थानों पर कब्जा तथा सेक्युलर प्रजाति के राजनेताओं के सत्तासीन होने के कारण देश की परिस्थितियां बिगड़ती गई। तब हिन्दू समाज की सुरक्षा ,हिन्दू संस्कृति का संवर्धन व संरक्षण के लिये गुरुजी के चिंतन और दादा साहब आप्टे के परिश्रम से संत चिन्मयानंद के मुम्बई स्थित सांदीपनी आश्रम मे जन्माष्टमी के दिन 1964 मे विहिप की स्थापना हुई। प्रान्त सत्संग सह प्रमुख मंजू वैष्णव ने महिला सत्संग की आवश्यकता के बारे में बताया। अंत में नरेंद्रसिंह शेखावत ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में महानगर धर्मप्रसार प्रमुख नीलेश पुरोहित, सुभाष गोयल, आशीष बिजारणियां, राजेश भार्गव, दीपसिंह राठौड़, राजेश गुप्ता, सुगनाराम, देवराज बोहरा व सतीश जयपुरिया मौजूद थे।

गौशाला परिसर में निकाली तिरंगा रैली

जयपुर (कासं)। भारत की आजादी के 75 वें अमृत महोत्सव के तहत भारतीय जैविक किसान उत्पादक संघ व हैनीमैन चैरिटेबल मिशन सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में तिरंगा यात्रा निकाली गई। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अतुल गुप्ता ने बताया कि यह तिरंगा रैली प्रशांत चतुर्वेदी के नेतृत्व में श्रीपिंजरापोल गोशाला स्थित सनराइज ऑर्गेनिक पार्क से रवाना होकर गौशाला के मुख्य द्वार तक जाकर पुन: सनराइज पार्क पहुंची। इस दौरान प्रतिभागियों ने भारत माता की जय के जयकारे लगाते हुए तथा वंदे मातरम गीत गाते हुए राष्ट्रगान के साथ तिरंगा रैली का समापन किया। वहीं आदर्श नगर क्षेत्र के वार्ड 100 में रविवार को तिरंगा रैली पार्षद पुष्पेंद्र मीणा, समाजसेवी टाटा प्रकाश मीणा और पारस मीणा के नेतृत्व में निकाली गई। रैली में आदर्श नगर विधायक रफीक खान भी शरीक हुए। रैली में बड़ी संख्या में वाहनों पर सवार होकर युवाओं ने तिरंगा झंड़ा हाथ में लेकर भारत माता के जयकारे लगाए। तिरंगा वाहन रैली क्षेत्र के तमाम इलाकों में निकली, जगह-जगह आमजन ने स्वागत भी किया।

पार्षद ने निकाली 'आजादी गौरव यात्रा'

जयपुर । आजादी के अमृत महोत्सव के तहत निकल रही कांग्रेस की 'आजादी गौरव यात्रा' रविवार को ग्रेटर निगम क्षेत्र के वार्ड 22 के पार्षद प्रदीप तिवारी के नेतृत्व में निकाली गई। यात्रा में बड़ी संख्या में युवाओं ने अपनी उपस्थिति दर्शाई। यात्रा मंदिर मोड सर्किल से रवाना होकर वार्ड 22 और वार्ड 23 के विभिन्न रास्तों से होते हुए मस्जिद मोड, बस स्टैंड पर समाप्त हुई। इस दौरान रास्ते में लोगों ने अपने घरों की छतों से तिरंगा यात्रा पर पुष्प वर्षा की और यात्रा का स्वागत किया। यात्रा में मनोज गोयल, दीपक गर्ग, महेंद्र शर्मा, विजय शर्मा एडवोकेट, अनिल संत, जगन सिंह, ओमी मीणा, कमल गुप्ता, दुर्गा पाल सिंह, वसीम खान और उदयपाल समेत बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद थे।

जीएनएम पूरक परीक्षा परिणाम जारी

जयपुर । राजस्थान नर्सिंग कौंसिल ने फरवरी में हुई जी.एन.एम. द्वितीय वर्ष पूरक परीक्षा साढ़े तीन वर्षीय पाठ्यक्रम का परिणाम जारी कर दिया है। कौंसिल के रजिस्ट्रार डॉ. शशिकान्त शर्मा ने बताया कि साथ ही मार्च में आयोजित जी.एन.एम. तृतीय वर्ष पूरक परीक्षा साढ़े तीन वर्ष पाठ्यक्रम, ए.एन.एम. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष मुख्य परीक्षा के पुनर्मूल्यांकन का भी परिणाम जारी कर दिया गया है।

नेवटा बांध में तैरता मिला युवक का शव

जयपुर । नेवटा बांध में रविवार शाम एक युवक का शव मिलने से सनसनी फैल गई। मुहाना पुलिस ने सिविल डिफेंस की मदद से शव को बाहर निकाला। मृतक की पहचान सुशील योगी (37) पुत्र चंदन मल योगी निवासी जोगियों का मोहल्ला चौमूं के रुप में हुई। पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए शव को हॉस्पिटल की मॉच्यूरी में रखवाया है। वह पिछले 2 दिन से ससुराल से लापता था। मुहाना थाने में उसकी गुमशुदगी दर्ज थी।

दलित छात्र की मौत से गुस्साएं छात्रों का राज. विवि. में प्रदर्शन

जयपुर । जालौर में टीचर की पिटाई से हुई दलित छात्र की मौत के मामले में रविवार को राजस्थान विवि. में पूर्व छात्र नेता नरसी किराड़ के नेतृत्व में छात्रशक्ति एक जुट हो गई और जमकर हंगामा किया। छात्रों ने विवि. का मुख्यद्वार बंद कर दिया और धरने पर बैठ गए। छात्रों ने पांच सूत्रीय मांगों को लेकर प्रशासन को ज्ञापन भी सौंपा। इस दौरान नरसी किराड़ ने ऐलान कर दिया कि जब तक इंद्र कुमार और उसके परिजनों को इंसाफ नहीं मिलेगा, तब तक छात्रों का प्रदर्शन विवि. के मुख्यद्वार पर जारी रहेगा। इस दौरान मौके पर मौजूद पुंलिस प्रशासन ने उनकी समझाइश का प्रयास भी किया, लेकिन छात्रों ने उनकी बात मानने से इंकार कर दिया। छात्रों ने इंद्र कुमार हत्या की फास्ट ट्रेक अदालत में सुनवाई करने और परिजनों को 50 लाख रुपए की मुआवजा राशि के साथ परिवार के दो सदस्यों को नौकरी देने की मांग की।

दो अफसरों को नागरिक सुरक्षा पदक मिलेगा

जयपुर, (का.सं.)। नागरिक सुरक्षा विभाग के दो वरिष्ठ अधिकारियों को केन्द्र सरकार की ओर से राष्ट्रपति के नागरिक सुरक्षा पदक प्रदान किए जाएंगे। इस संबंध में 15 अगस्त की पूर्व संध्या पर घोषणा की गई। इनमें नियंत्रक नागरिक सुरक्षा अलवर व जिला कलैक्टर जितेन्द्र कुमार सोनी तथा सेवानिवृत उप नियंत्रक जगदीश प्रसाद रावत शामिल है।

'राजस्थानी हैंडीक्राफ़्ट ने बनाई है दुनिया में जगह'

जयपुर । राजस्थान की हस्तकला का जन्म इस राज्य के निर्माण के साथ ही हो गया था। सबसे पुरानी और दूर देश तक जा चुकी इस कला में आज पूरा राजस्थान बसता है। वहीं इस कला के साथ आज पूरी दुनिया राजस्थान की कला को सलाम करती है। यह बात फेडरेशन ऑफ़ राजस्थान हैंडीक्राफ्ट्स एक्सपोर्ट्स द्वारा आयोजित आज़ादी का अमृत महोत्सव में अतिथियों ने कही। यहां राजस्थान हैंडलूम व हैंडीक्राफ्ट्स इंडस्ट्री से लेखराज माहेश्वरी, संकल्प आर्ट्स से गिरीश अग्रवाल, दिलीप क्राफ्ट्स से दिलीप बैद, नीरजा इंटरनेशनल से लीला बोरडिया और हस्तकला से जसवंत मील प्रमुख अतिथिगणों में मौजूद रहे। फोरहेक्स के अध्यक्ष सुनीत जैन, सचिव रवि उत्मानी, कोषाध्यक्ष राजीव आकड़, सदसय दिलीप संकित भी उपस्थित रहे।

तिरंगा रैली में सैकड़ों युवाओं ने लगाए भारत माता के जयकारे

जयपुर (कासं)। शहर के मोतीडूंगरी मंदिर से सैकडों युवाओं ने जवाहर सर्किल होते हुए त्रिमूर्ति सर्किल तक तिरंगा रैली निकाली।

मालवीय नगर विधायक कालीचरण सराफ और मुहाना फल सब्जी मंडी के अध्यक्ष राहुल तंवर व पूर्व पार्षद संजीव शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। राहुल तंवर ने बताया कि तिरंगा रैली में सैकडों युवाओं ने उत्साह से भाग लिया और भारत माता के जयकारे भी लगाए। प्रत्येक युवा अपने वाहन पर तिरंगा झंड़ा लगाकर रैली में शामिल हुआ। इस मौके पर निक्की गुर्जर, चेतन राव, अक्षय सैनी, राहुल मीणा, देवांशु गुर्जर, कुलदीप सिंह, शैतान सिंह, करण सिंह, जुगल गुर्जर, जतिन सैनी, पुनीत शर्मा, चितरंजन सैनी, राहुल छापोला, संजू सैनी, करण गुर्जर, कमल राव, निहार स्वामी, युवराज, जुगल मीणा और दीपक मीणा मौजूद थे। कार्यक्रम संयोजक राहुल तंवर, निक्की गुर्जर, चेतन राव और अक्षय सैनी ने शहीदों और स्वतंत्रता सैनानियों को नमन करते हुए स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी।

कर चले हम फिदा.., सारे जहां से अच्छा.. जैसे देशभक्ति तरानों ने दिल को छुआ

जवाहर कला केन्द्र में रविवार को जश्न-ए-आजादी सांस्कृतिक कार्यक्रम में कलाकारों ने प्रस्तुतियां दी।

जयपुर (कासं)। जवाहर कला केन्द्र का रंगायन सभागार रविवार को आजादी के तरानों से गूंज उठा।आजादी के अमृत महोत्सव के तहत संजोए जश्न-ए-आजादी सांस्कृतिक कार्यक्रम में कलाकार सुदेश शर्मा ने अपनी पुरकशिश आवाज में देशभक्ति में रचे-बसे बॉलीवुड हिट नं. की औजपूर्ण प्रस्तुति से दर्शकों के दिलों को छू लिया। कार्यक्रम में शिष्य कलाकार रवीन्द्र सिंह ने भी गीत पेश किए।

कलाकार सुदेश शर्मा ने ए मेरे प्यारे वतन...,कर चले हम फिदा..., सारे जहां से अच्छा..., है प्रीत जहां की रीत सदा...जैसे गीतों से माहौल में देशप्रेम का जज्बा जगाया। वहीं कलाकार रवीन्द्र सिंह ने ए मेरे वतन के लोगों...गीत पेशकर सुर, लय और ताल की उम्दा बानगी दर्शायी। कार्यक्रम में श्री रामपाल कुमावत अति. प्रशासनिक अधिकारी जेकेके व अन्य गणमान्य लोग भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में कलाकारों ने नए फिल्मों के आजादी के तराने भी गुनगुनाए। ओ देश मेरे..., संदेसे आते हैं..., ए वतन मेरे आबाद रहे तू...कलाकारों माहौल में देशभक्ति का रंग भर दिया। इस दौरान 8 युवाओं के ठ्गुप ने ्रतेरी मिट्टी में मिल जावा...की सुरीली प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में गांधीजी के प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने कहिये..., जो प्रित परायी जाने रे..., रघुपति राघव राजा राम...भी पेश किए गए। वन्दे मातरम्..., ये देश है वीर जवानों का..., धरती सुनहरी...गीतों ने रंग जमाया। की-बोर्ड पर एस. बबलू, ऑक्टोपेड पर इरशाद, तबले पर जसवंत, गिटार पर किरण कुमावत ने प्रभावी संगत कर कार्यक्रम में रौनक भरी।

PMCH HEALTH ADVISORS

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, बेदला

(NABH प्रमाणित)

बेहतरीन उपचार एवं उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ आपके लिए

हैं तैयार हम

नि:शुल्क डिलीवरी
(सामान्य एवं सिजेरियन)
(नवजात शिशु की सम्पुर्ण सुरक्षा के साथ)

इन योजनाओ के अंतर्गत आने वाले लाभार्थी PMCH के उपरोक्त विभागों में कैशलेस उपचार की सुविधा का फ़ायदा उठा सकते है

मल्टीस्पेशिलिटी सुविधा

- जनरल मेडिसिन विभाग
- अस्थिरोग विभाग
- बाल एवं शिशु रोग
- नेत्र विभाग
- नाक-कान-गला विभाग
- प्रसुति एवं स्त्रीरोग विभाग
- चर्मरोग विभाग
- जनरल एवं लेप्रोस्कापिक सर्जरी विभाग
- वक्ष एवं क्षय रोग विभाग
- मनो चिकित्सा विभाग

स्वास्थ्य योजनाएं

- RGHS राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना
- चिरंजीवी — मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना MMCSBY
- जननी सुरक्षा योजना JSY
- कर्मचारी राज्य बीमा योजना ESIC

- दन्त चिकित्सा विभाग
- फिजियोथैरेपी

सुपरस्पेशिलिटी सुविधा

- हदयरोग विभाग
- मूत्ररोग विभाग
- गुर्दा रोग विभाग
- कैंसर विभाग
- पेट एवं लीवर रोग विभाग
- पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग
- मधुमेह, थाइराइड एवं हार्मोन्स रोग विभाग
- बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग

सभी इंश्सोरेन्स कंपनी और महत्वपूर्ण टी.पी.ए. (TPA) के लिए केशलेस इलाज की सुविधा

*नियम व शर्ते लागू

STAR Health Insurance — The Health Insurance Specialist | BAJAJ Allianz | RELIGARE Health Insurance | Cigna TTK Health Insurance | HDFC ERGO Take it easy! | Universal Sompo General Insurance Co. Ltd. | care HEALTH INSURANCE Health ki Guarantee | RELIANCE General Insurance | Apollo Munich HEALTH INSURANCE | ADITYA BIRLA HEALTH | SBI General INSURANCE | Royal Sundaram General Insurance | TATA AIG INSURANCE WITH YOU ALWAYS | UnitedHealthcare PAREKH | MedSave INDIA | Medi Assist | MD india | Paramount Health | HERITAGE HEALTH | नेशनल इन्श्योरेन्स National Insurance

ई.ई.जी. | ई.एम.जी. | कलर डोप्लर | सीटी स्केन | एम.आर.आई. | डायलिसिस सभी तरह की खून एव मूत्र की जांचे एवं ईको कार्डियोग्राफी की सुविधा | फिजियोथेरेपी की सुविधा

24/7 सुविधाएँ उपलब्ध

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल

भीलों का बेदला, सुखेर-पिण्डवाड़ा हाईवे, उदयपुर, राजस्थान - 313001
फोन: 0294-3520000, 9828144314

मेरे जीवन काल में तो यह मरेगा नहीं (टैस्ट क्रिकेट) परन्तु इसे खेलेगा कौन? यह बड़ा सवाल है।

- इयान चैपल

पूर्व आस्ट्रेलियाई कप्तान, टैस्ट क्रिकेट को लेकर

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ **विनेश फोगाट**

बर्मिंघम कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में गोल्ड मेडल जीतने वाली भारत की स्टार महिला रेसलर विनेश फोगाट अपनी इस उपलब्धि से काफी खुश हैं। हालांकि इस कॉमनवेल्थ से पहले विनेश अपने प्रदर्शन काफी निराश थीं। यहां तक की उन्होंने रेसलिंग छोडने का भी मन बना लिया था। उन्होंने यह सनसनीखेज खुलासा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात करने के बाद कही है। विनेश बताया कि लगातार दो ओलिंपिक में मेडल से चूकने के बाद वह पूरी तरह से हताश हो गई थी और उन्होंने सोच लिया था कि वह अब इस खेल से संन्यास ले लेंगी।

क्या आप जानते हैं ?... भारत की ओर से दो गेंदबाजों को वनडे में हैट्रिक बनाने का श्रेय हासिल है। चेतन शर्मा ने 1987 में न्यूजीलैंड में तथा कपिल देव ने (1991) में। श्रीलंका के विरुद्ध यह उपलब्धि हासिल की।

जम्बाब्वे दौराः राहुल की वापसी के बाद गिल को तीसरे क्रम पर करनी पड सकती है बल्लेबाजी

जम्बाब्वे दौराः राहुल की वापसी के बाद गिल को तीसरे क्रम पर करनी पड़ सकती है बल्लेबाजी

नयी दिल्ली, 14 अगस्त। जिम्बाब्वे के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला एशिया कप से पहले लोकेश राहुल के लिए लय को परखने का शानदार मौका होगा और ऐसे में वह आगामी मैचों में शिखर धवन के साथ पारी का आगाज करना पसंद करेंगे।

इस दौरे पर टीम की कमान संभाल रहे राहुल अगर पारी का आगाज करेंगे तो वेस्टइंडीज के दौरे पर धवन के साथ इस भूमिका को निभाने वाले शुभमन गिल को तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी के लिए आना पड़ सकता है। भारतीय टीम के लिए अभी टी20 विश्व कप सर्वोपरि है और जहां तक सबसे छोटे प्रारूप की बात है तो गिल भारतीय टीम का हिस्सा नहीं है। ऐसे में 27 अगस्त से शुरू होने वाले एशिया कप से पहले टीम प्रबंधन चोट से वापसी कर रहे राहुल को बल्लेबाजी का पर्याप्त मौका देना चाहेगा।

गुरुवार (18 अगस्त) से हरारे में शुरू होने वाली तीन मैचों की संक्षिप्त श्रृंखला के लिए मुख्य कोच राहुल द्रविड़ टीम के साथ नहीं होंगे। उनकी जगह एनसीए(राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी) प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण कोच की भूमिका निभायेंगे। यह लगभग निश्चित है कि लक्ष्मण मुख्य कोच द्वारा निर्धारित खाके का पालन करेंगे। राहुल की वापसी ने शीर्ष क्रम के युवा बल्लेबाज गिल के लिए भी मुश्किलें खड़ी कर दी हैं। गिल ने वेस्टइंडीज में 50 ओवरों के प्रारूप में शानदार बल्लेबाजी की। वह64, 43 और नाबाद 98 रन की मैच जिताऊ पारियों के बाद मैन ऑफ द सीरीज बने थे।

राष्ट्रीय टीम के पूर्व चयनकर्ता और टेस्ट मैचों के सलामी बल्लेबाज देवांग गांधी ने इस मुद्दे पर कहा, '' मुझे लगता है कि शुभमन को भारतीय टीम प्रबंधन द्वारा सही तरीके से तैयार किया जा रहा है। उन्होंने कैरेबियाई सरजमीं पर एकदिवसीय मैचों में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है।

मुझे लगता है कि टीम खिलाड़ियोंको इस तरीके से तैयार कर रही कि वह किसी भी स्थान पर बल्लेबाजी कर सके। इस विशेष श्रृंखला के लिए शुभमन को तीसरे नंबर पर आना पड़ सकता है''

देवांग की बातों से पूर्व भारतीय खिलाड़ी दीप दास गुप्ता भी सहमत दिखे। उन्होंने कहा, ''इतनी अच्छी लय में होने के बाद किसी खिलाड़ी के लिए यह मुश्किल है। टीम का लक्ष्य फिलहाल राहुल को एशिया कप टी20 के लिए सलामी बल्लेबाज के तौर पर तैयार करना होगा। उसे बल्लेबाजी के लिए काफी समय मिलना चाहिए और यह मेरी प्राथमिकता है। मुझे लगता है कि यह एक अल्पकालिक व्यवस्था होगी क्योंकि मुझे लगता है कि शुभमन को एकदिवसीय विश्व कप के लिए सलामी बल्लेबाज के रूप में तैयार किया जा रहा है।

पीएम मोदी को निकहत जरीन ने दिए मुक्केबाजी दस्ताने, हिमा दास ने भी भेंट किया गमछा

नई दिल्ली, 14 अगस्त। भारतीय खिलाड़ियों ने बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों में शानदार प्रदर्शन के लिये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सम्मानित किये जाने पर खुशी और आभार व्यक्त किया। बॉक्सर निकहत जरीन ने उन्हें मुक्केबाजी 'ग्लव्ज' और स्प्रिंटर हिमा दास ने पारपंरिक असमी गमछा उपहार में दिया। मोदी ने शनिवार को अपने निवास पर भारतीय दल की मेजबानी की और खिलाड़ियों को सम्मानित किया। भारतीय खिलाड़ियोंने बर्मिंघम में शानदार प्रदर्शन करते हुए 61 पदक हासिल किये, जिसमें 22 स्वर्ण, 16 रजत और 23 कांस्य पदक शामिल हैं।

मुक्केबाज निकहत ने ट्वीट किया, 'माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर को सभी मुक्केबाजों के हस्ताक्षर किये हुए मुक्केबाजी 'ग्लव्ज' उपहार में देने से सम्मानित महसूस कर रही हूं। इस शानदार मौके के लिये आपका शुक्रिया। देश को गौरवान्वित करने वाले अपने साथी खिलाड़ियोंके साथ शानदार दिन बिताया।' विश्व चैम्पियनशिप की स्वर्ण पदक विजेता स्टार मुक्केबाज निकहत ने बर्मिंघम में अपने वजन वर्ग में स्वर्ण पदक जीता था।

हिमा ने अपने ट्विटर हैंडल पर लिखा, 'राष्ट्रमंडल खेल 2022 की बदौलत हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा

आर्शीवाद प्राप्त करके उत्साहित हूं। भाग्यशाली हूं कि उन्हें हमारा पारपंरिक गमछा उपहार में पेश किया जो पूरे असम की कृतज्ञता से भरा है।' तोक्यो ओलंपिक में ऐतिहासिक रजत पदक जीतने के एक साल बाद राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली चैम्पियन भारोत्तोलक मीराबाई चानू ने प्रधानमंत्री को उनकी प्रोत्साहन भरी बातों के लिये धन्यवाद कहा। चानू ने कहा, 'माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सर से मिलने और बातचीत करने के बाद सम्मानित महसूस कर रही हूं। आपके समर्थन और प्रोत्साहन के लिये शुक्रिया सर। जय हिंद।'

प्रधानमंत्री ने भारतीय दल का अभिनंदन करते हुए शनिवार को कहा कि भारतीय खेलों का स्वर्णिम काल दस्तक दे रहा है और अच्छे प्रदर्शन पर संतोष करके चुप नहीं बैठना है।

बैडमिंटन खिलाड़ी चिराग शेट्टी ने 'माइक्रोब्लागिंग साइट' पर लिखा, 'अपना कीमती वक्त निकालने और हमें अपने निवास पर आमंत्रित करने के लिये धन्यवाद सर। आपके साथ बात करना हमेशा ही शानदार रहता है।' उनके युवा बैडमिंटन साथी लक्ष्य सेन ने भी प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित किये जाने पर आभार व्यक्त किया। उन्होंने ट्वीट किया, 'सभी खिलाड़ियोंके लिये कितना शानदार दिन रहा, आभार। हमारी कड़ी मेहनत की प्रशंसा करने और प्रोत्साहन भरे शब्दों के लिये आपका बहुत बहुत धन्यवाद। हम सभी आपके समर्थन के आभारी हैं। अपने देश को गौरवान्वित करना जारी रखेंगे। जय हिंद।'

स्टार पैरा टेबल टेनिस खिलाड़ी भाविना पटेल ने कहा, 'माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से एक बार फिर मिलना, उनसे बातचीत करना और उनका आर्शीवाद लेना हमेशा की तरह प्रेरणादायी रहा। हमारे प्रदर्शन में उनकी दिलचस्पी और इसके बारे में विस्तृत बातचीत बहुत ही संतुष्टि देती है।'

फीफा प्रतिबंध की धमकी पर छेत्री ने खिलाड़ियों से कहा, ज्यादा ध्यान मत दो

बेंगलुरू, 14 अगस्त। अनुभवी स्ट्राइकर सुनील छेत्री ने रविवार को साथी खिलाड़ियों को भारतीय फुटबॉल पर फीफा निलंबन के खतरे पर ज्यादा चिंता नहीं करने और मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी रखने की सलाह दी।

इस महीने के शुरू में विश्व फुटबॉल संचालन संस्था फीफा ने तीसरे पक्ष के 'हस्तक्षेप' के कारण अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) को निलंबित करने और इससे अक्टूबर में महिला अंडर-17 विश्व कप की मेजबानी के अधिकार छीनने की धमकी दी थी। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय महासंघ को चुनाव कराने का निर्देश दिया था जिसके कुछ ही दिन बाद यह चेतावनी जारी की गयी थी।

उच्चतम न्यायालय द्वारा नियुक्त की गयी प्रशासकों की समिति (सीओए) ने हालांकि तब से चुनावी प्रक्रिया शुरू कर दी है और चुनाव 28 अगस्त को कराये जाने हैं। छेत्री ने नये सत्र की तैयारियों पर उनके क्लब बेंगलुरू एफसी द्वारा आयोजित वर्चुअल मीडिया बातचीत के दौरान कहा, ''मैंने लडकों से बात की है और मेरी सलाह है कि ज्यादा ध्यान इस

पर मत लगाओ क्योंकि यह आपके नियत्रंण से बाहर की चीज है।'' उन्होंने कहा, ''जो लोग शामिल हैं, वो यह सुनिश्चित करने के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ कर रहे हैं कि हम सर्वश्रेष्ठ संभव नतीजा हासिल कर लेंगे।'' छेत्री ने कहा, ''हर कोई इस ओर कड़े प्रयास कर रहा है। जहां तक खिलाड़ियों का संबंध है तो हम सुनिश्चित करेंगे कि हम अपना काम उचित तरीके से करें। '' उन्होंने कहा, ''हमें सुनिश्चित करना होगा कि आप खुद को बेहतर खिलाड़ी बनाओ। जब भी आपको अपने क्लब या अपने देश के प्रतिनिधित्व का मौका मिले तो अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो। ''

छेत्री ने कहा, ''एआईएफएफ में सभी हर संभव तरीके से इससे निपटने की कोशिश कर रहे हैं ताकि नतीजा हमारे हक में रहे।'' भारत को 11 से 30 अक्टूबर तक फीफा महिला अंडर-17 विश्व कप की मेजबानी करनी है। डूरंड कप 16 अगस्त से कोलकाता में शुरू होगा जिसमें बेंगलुरू एफसी का सामना टूर्नामेंट के दूसरे दिन जमशेदपुर एफसी से होगा। बेंगलुरू एफसी ने 2013 में आने के बाद लगभग हर बड़ा राष्ट्रीय खिताब अपने नाम किया है इसलिये टीम अपनी 'ट्राफी कैबिनेट' में डूरंड कप ट्राफी अपने नाम करने के लिये बेताब होगी। छेत्री ने कहा, ''यह बहुत ही विशेष है। यह सबसे पुराने टूर्नामेंट में से एक है जो बहुत बड़ी बात है। लेकिन क्लब ने भी यह खिताब नहीं जीता है और व्यक्तिगत रूप से भी मैंने डूरंड कप नहीं जीता है।'' उन्होंने कहा, ''मैं काफी टूर्नामेंट जीतने में भाग्यशाली रहा हूं और भारत में लगभग जितने भी टूर्नामेंट हैं, सभी जीत चुका हूं बस डूरंड कप की कमी है। ''

डुआने ओलीवियर इंग्लैंड के खिलाफ तीन टेस्ट की श्रृंखला से बाहर

लंदन, 14 अगस्त। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज डुआने ओलीवियर चोटिल होने के कारण इंग्लैंड के खिलाफ 17 अगस्त से शुरू हो रही तीन टेस्ट की श्रृंखला में नहीं खेल पाएंगे।

क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) ने बताया कि ओलीवियर के कूल्हे में चोट लगी है। इस तेज गेंदबाज को कैंटरबरी में इंग्लैंड लॉयन्स के खिलाफ अभ्यास मैच के दौरान चोट लगी।

दक्षिण अफ्रीका ने हालांकि ओलीवियर के विकल्प के रूप में किसी खिलाड़ी को टीम में शामिल नहीं किया है। सीएसए ने ट्वीट किया, ''दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज डुआने ओलीवियर दाएं कूल्हे में ठोड दो की चोट के कारण इंग्लैंड के खिलाफ तीन टेस्ट की श्रृंखला से बाहर हो गए हैं। उनके विकल्प के तौर पर किसी खिलाड़ी को शामिल नहीं किया गया है।'' तीन टेस्ट की श्रृंखला का पहला टेस्ट 17 अगस्त से लाड्र्स में खेला जाएगा। दूसरा टेस्ट मैनचेस्टर में 25 अगस्त से जबकि तीसरा टेस्ट लंदन के द ओवल में आठ सितंबर से होगा।

कूल्हे की चोट के कारण ऑलिवर इंग्लैंड टेस्ट शृंखला से बाहर

जोहान्सबर्ग, 14 अगस्त । दक्षिण अफ्रीका के तेज़ गेंदबाज़ डुएन ऑलिवर कूल्हे की मांसपेशी में चोट के कारण इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली टेस्ट शृंखला से बाहर हो गये हैं। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) ने रविवार को यह जानकारी दी। ऑलिवर को यह चोट इंग्लैंड लायन्स के खिलाफ खेले गये चार-दिवसीय अभ्यास मैच के दौरान लगी थी। दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट ने फिलहाल ऑलिवर की जगह किसी गेंदबाज को शामिल नहीं किया है। प्रोटियाज़ के अठाणी गेंदबाज कगिसो रबाडा भी इस समय एड़ी की चोट के कारण टीम से बाहर हैं, और ऑलिवर की चोट ने दक्षिण अफ्रीका की चिंताओं को दोगुना कर दिया है। इस समय दक्षिण अफ्रीका के पास लुंगी एंगिडी, एनरिक नॉर्खिया, मारको जैनसेन, ग्लेंटन स्टूर्मन और लुथो सिपामला के रूप में पांच तेज़ गेंदबाज़ मौजूद हैं।

वेस्ट इंडीज़ एकदिवसीय शृंखला से बाहर हुए हेनरी

वेलिंगटन, 14 अगस्त । न्यूजीलैंड के अनुभवी तेज़ गेंदबाज़ मैट हेनरी पसली की चोट के कारण वेस्टइंडीज के खिलाफ आगामी एकदिवसीय श्रृंखला से बाहर हो गए हैं। न्यूजीलैंड क्रिकेट (एनज़ेडसी) ने रविवार को यह जानकारी दी। एनज़ेडसी ने बताया कि हेनरी को पिछले सप्ताह प्रशिक्षण के दौरान बाईं ओर दर्द उठा और उपचार के बाद भी उनकी स्थिति बेहतर नहीं हुई।

इसके बाद हेनरी को कैरिबियन से वापस न्यूजीलैंड भेजने का फैसला किया गया। युवा गेंदबाज बेन सीयर्स को उनकी जगह टीम में शामिल किया गया है। सीयर्स इस सप्ताह शुरू होने वाली तीन मैचों की श्रृंखला के दौरान अपने अंतरराष्ट्रीय एकदिवसीय करियर की शुरुआत कर सकते हैं।

गुजरात ने जीता अल्टिमेट खो-खो का पहला मैच

पुणे, 14 अगस्त । गुजरात जायंट्स ने अनिकेत पोटे (दो ड्रीम रन, एक स्काई डाइव) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत मुंबई खिलाड़ी को 69-44 के अंतर से मात देकर अल्टिमेट खो-खो (यूकेके) के पहले मैच में जीत दर्ज की। गुजरात ने टॉस जीतकर पहले डिफेंस चुना। पहली पारी में मुंबई की शुरुआत अच्छी रही और उन्होंने डिफेंडिंग टीम के पहले दो बैच जल्दी वापस भेज दिये, लेकिन तीसरे बैच में आये अनिकेत ने ड्रीम रन करते हुए अपनी टीम को दो बहुमूल्य पॉइंट दिलाये। पहली टर्न के अंत तक मुंबई 22-2 से आगे चल रही थी, लेकिन गुजरात ने अटैकिंग टर्न में मुंबई की बढ़त को समाप्त करते हुए 26-24 की बढ़त हासिल कर ली। दूसरी पारी में मुंबई को बडी बढत के लिये गुजरात को ऑल-आउट करना था लेकिन अनिकेत एक बार फिर उनके गले का कांटा बन गये। अनिकेत ने दूसरी पारी में भी ड्रीम रन पूरा किया, और सूयष गलगटे के पहले ड्रीम रन की बदौलत गुजरात ने मुंबई की बढ़त को 44-30 पर रोक दिया।

इंटर मिलान ने लीस को 2-1 से हराया

मिलान, 14 अगस्त। रोमेलु लोकाकु को वापसी में आकर गोल करने में महज 82 सेकेंड लगे जिससे इंटर मिलान ने शनिवार को सीरी ए फुटबॉल मैच में लीस पर 2-1 से जीत हासिल की। बेल्जियम के स्ट्राइकर लोकाकु के दूसरे मिनट में किये गये गोल से इंटर मिलान 1-0 से बढ़त बनाये था। इंटर मिलान ने चेल्सी से उधार पर फिर से लुकाकु को जोड़ा है। पर दूसरे हाफ में लीस ने असान सीसे के 48वें मिनट में किये गये गोल से स्कोर 1-1 बराबर कर दिया। फिर डेंजेल डमफ्राइज के (90 5 वें मिनट में किये गये) गोल ने सुनिश्चित किया कि इंटर मिलान लीग में जीत से शुरूआत कर सके। एसी मिलान ने भी जीत से शुरूआत की, उसने उडीनेस पर 4-2 से जीत हासिल की।

फ्रेंच लीग में मोंटपेलियर को 5-2 से हराया

पेरिस, 14 अगस्त। नेमार और स्ट्राइकरों के शानदार प्रदर्शन से पेरिस सेंट जर्मेन क्लब ने फ्रेंच लीग फुटबॉल मैच में मोंटपेलियर पर 5-2 से जीत हासिल की। वहीं ग्रोइन चोट से वापसी कर रहे किलियान एमबापे ने गोल कर खाता खोला लेकिन पेनल्टी पर गोल करने से चूक गये। नेमार ने शनिवार को दो गोल दागे जिससे उनके दो लीग मैचों में तीन गोल हो गये हैं। वहीं लियोनल मेस्सी मुकाबले में कोई गोल नहीं कर सके। सेंटर बैक फालाये साको ने एमबापे के शॉट की दिशा बदलने का प्रयास किया लेकिन 39वें मिनट में वह आत्मघाती गोल कर बैठे और पीएसजी का खाता खुल गया। नेमार ने 43वें मिनट में पेनल्टी से गोल कर टीम को 2-0 से आगे कर दिया और फिर उन्होंने इसके बाद 51वें मिनट में अपना दूसरा गोल किया। एमबापे ने 69वें मिनट में और रेनाटो सांचेज ने 87वें मिनट में गोल दागे। मोंटपेलियर के लिये वाहबी खाजरी ने 58वें मिनट में और एंजो जियानी चाटो एमबयायी ने (90 2वें मिनट में) गोल किया।

टोरंटो ओपन के फाइनल में पहुंची हालेप

टोरंटो, 14 अगस्त । रोमानिया की सिमोना हालेप ने रविवार को अमेरिका की जेसिका पेगुला को हराकर चौथी बार टोरंटो ओपन के फाइनल में जगह बनाई। दो बार की नेशनल बैंक ओपन चैंपियन हालेप ने अपनी अमेरिकी प्रतिद्वंदी को 2-6, 6-3, 6-4 से मात दी। जनवरी में मेलबर्न 250 जीतने के बाद टोरंटो ओपन हालेप का पहला फाइनल है। साथ ही 2020 में रोम जीतने के बाद से पूर्व नंबर एक के लिए यह सबसे बड़ा फाइनल है। यह जीत सुनिश्चित करती है कि सोमवार को डब्ल्यूटीए टूर रैंकिंग में हालेप शीर्ष 10 में लौट आएंगी। पेगुला ने पहली बार हालेप का सामना करते हुए अपने फ्लैट बेसलाइन गेम और नेट पर कुशल काम के साथ शुरुआती सेट अपने नाम किया। हालेप बेसलाइन पर संघर्ष करती नज़र आयीं और उनका विश्वसनीय बैकहैंड भी अक्सर टूटता रहा, लेकिन उन्होंने बेहतर स्पिन के प्रयोग से गेंद को पेगुला की पहुंच से दूर करते हुए बाज़ी मारी।

फाइनल में हालेप से भिडेंगी हद्दाद माइया

टोरंटो, 14 अगस्त । ब्राज़ील की बीट्रिज़ हद्दाद माइया ने शनिवार को अपने करियर में एक और उपलब्धि हासिल करते हुए चेक गणराज्य की कैरोलिना प्लिस्कोवा को हराकर नेशनल बैंक ओपन के फाइनल में जगह बनायी। हद्दाद माइया ने करीब दो घंटे चले सेमीफाइनल में प्लिस्कोवा को 6-4, 7-6(7) से मात देकर अपने पहले डब्ल्यूटीए 1000 फाइनल में कदम रखा। इस जीत के साथ हद्दाद माइया ने सोमवार को जारी होने वाली डब्ल्यूटीए रैंकिंग में 16वां स्थान सुनिश्चित कर लिया है। ब्राज़ीलियन खिलाडी ने जीत के बाद कहा, ''यह एक विशेष क्षण है। मुझे लगता है कि मेरा ड्रॉ बहुत कठिन था। मुझे खुद को आगे बढ़ाना पड़ा। मैंने बहुत कठिन क्षण खेले।'' हद्दाद माइया फाइनल में रोमानिया की सिमोना हालेप के खिलाफ अपनी दावेदारी पेश करेंगी, जो सेमीफाइनल में अमेरिका की जेसिका पेगुला को हराकर आ रही हैं।

मॉन्ट्रियल ओपन फाइनल में पहुंचे हरकाज़

मॉन्ट्रियल, 14 अगस्त । पोलैंड के आठवीं सीड खिलाड़ी ह्यूबर्ड हरकाज़ ने रविवार को नेशनल बैंक ओपन में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए नॉर्वे के कैस्पर रूड को हराकर फाइनल में जगह बनायी। हरकाज़ ने दो घंटे दो मिनट चले सेमीफाइनल में पहला सेट हारने के बाद दमदार वापसी की और रूड को 5-7, 6-3, 6-2 से हराकर इस हफ्ते लगातार चौथी बार तीन सेटों में जीत दर्ज की। हरकाज़ ने एटीपी मास्टर्स 1000 आयोजन के फाइनल में जगह बनाने के बाद कहा, ''मैं मैच में बने रहने की कोशिश कर रहा था। कैस्पर वास्तव में अविश्वसनीय टेनिस खेल रहे थे और वह शुरुआत में बेहतर खिलाडी थे, खासकर पहले सेट के दौरान। मैं खेल में बने रहने की कोशिश कर रहा था और जितना अच्छा हो सके मुकाबला करने के लिए पकड़ बना रहा था।''

फाइनल में पहुंचे कारेनो बुस्ता

मॉन्ट्रियल, 14 अगस्त । स्पेन के पाब्लो कारेनो बुस्ता ने शनिवार रात मॉन्ट्रियल ओपन में अपने विजय रथ को आगे बढ़ाते हुए ब्रिटेन के डेनियल इवांस को हराकर फाइनल में जगह बनायी। कारेनो बुस्ता ने करीब तीन घंटे चले सेमीफाइनल मुकाबले में इवांस को 7-5, 6-7(7), 6-2 से हराकर अपने पहले एटीपी मास्टर्स 1000 फाइनल में कदम रखा। 31 वर्षीय स्पेनियार्ड के पास दूसरे सेट में मैच पॉइंट था।

पुजारा का बल्ला गरजा

होव, 14 अगस्त। भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा इंग्लैंड में काउंटी टीम ससेक्स के लिए खेल रहे हैं। रॉयल लंदन वनडे कप में उन्होंने शुक्रवार को 107 रनों की पारी खेली थी। दो दिन बाद ही उनके बल्ले से एक और तूफानी पारी निकली है। इस बार ससेक्स की कप्तानी कर रहे पुजारा ने 174 रनों की पारी खेल दी है। सरे के खिलाफ मैच में पुजारा चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे और सभी गेंदबाजों की क्लास लगा दी।

चेतेश्वर पुजारा ने 131 गेंदों पर 174 रनों की पारी खेली। उनकी इस पारी में 20 चौके और 5 छक्के शामिल थे। उन्होंने 103 गेंदों पर शतक पूरा किया। शतक बनने के बाद उन्होंने खेलने का तरीका ही बदल दिया। पुजारा ने अगली 28 गेंदों पर 74 रन ठोक दिए। ससेक्स ने 9 रन पर ही दो विकेट खो दिए थे। इसके बाद पुजारा ने तीसरे विकेट के लिए टॉम क्लार्क (104) के साथ 205 रनों की साझेदारी बनाई। यह लिस्ट ए क्रिकेट में चेतेश्वर पुजारा की सबसे बड़ी पारी भी है। इससे पहले उनकी सबसे बड़ी पारी 158 रनों की थी, जो पुजारा ने 2012 चैलेजर ट्रॉफी में इंडिया बी के लिए खेली थी। लिस्ट ए क्रिकेट में यह उनका 13वां शतक है। भारत के लिए सिर्फ 5 वनडे खेलने वाले पुजारा ने लिस्ट ए क्रिकेट में 55 की औसत से रन बनाए हैं। लेकिन भारत के लिए 5 पारियों में उनके बल्ले से सिर्फ 51 रन निकले। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट सिर्फ 39.23 का रहा। ससेक्स के किसी बल्लेबाज की भी लिस्ट ए में यह सबसे बडी पारी है। ससेक्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 विकेट पर 378 रन बनाए। सरे को मुकाबला जीतने के लिए 379 रन बनाने हैं। पुजारा 48वें ओवर की तीसरे गेंद पर कॉनर मैककेर का शिकार बने। सरे के लिए यूसेफ माजिद सबसे महंगे गेंदबाज रहे। उन्होंने 6 ओवर में 9 की इकोनॉमी से रन दिए। पुजारा की टीम सरे ने अभी तक चार मैच खेले हैं, जिसमें उसे दो जीत और दो हार मिली है।

एशियाई खेलों, ओलंपिक में पदक जीतना अगला लक्ष्यः पहलवान मोहित

भिवानी, 14 अगस्त। राष्ट्रमंडल खेलों में 125 किलोग्राम भार वर्ग की फ्री स्टाईल कुश्ती स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने वाले मोहित गोवाल ने रविवार को यहां कहा कि अब उनका अगला लक्ष्य एशियाई खेलों और ओलंपिक जैसे आयोजनों में पदक जीतना है।

पदक जीतकर अपने पैतृक गांव बामला लौटे मोहित का यहां के घंटाघर चौक पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसके बाद विजय जुलूस निकालते हुए उसे गांव बामला तक ले जाया गया। बामला में भी मोहित का भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। स्थानीय प्रशंसकों ने मोहित का स्वागत फूल-मालाओं, ढोल-नगाडों व नोटों की मालाओं के साथ स्वागत किया। इस मौके पर मोहितने कहा कि वह अपनों के बीच पहुंचकर गौरवान्वित महसूस कर रहे है। उन्होंने कहा, ''मैं इस पदक को गुरु, परिवार व खेल प्रेमियों की दुआओं के चलते जीत पाया हूं। अब मेरा ध्यान आगामी प्रतियोगिताओं पर है। मैं अगले साल एशियाई खेलों और 2024 में ओलंपिक में इससे बेहतर प्रदर्शन करना चाहता हूं।''

राजस्थान रॉयल्स के मालिक ने मुझे 3-4 चांटे मारे:टेलर

वेलिंगटन, 14 अगस्त । न्यूजीलैंड के पूर्व बल्लेबाज़ रॉस टेलर ने खुलासा किया है कि आईपीएल के 2011 सत्र के एक मैच में उनके शून्य पर आउट होने के कारण राजस्थान रॉयल के एक मालिक ने उन्हें तीन-चार चांटे मारे थे। टेलर ने कहा कि यह चांटें हंसी-मज़ाक के माहौल में मारे गये थे लेकिन यह पूरी तरह से नाटक नहीं था।

टेलर ने अपनी आत्मकथा ब्लैक एंड व्हाइट में लिखा, ''राजस्थान और किंग्स इलेवन पंजाब के बीच मोहाली में मैच हुआ। हमें 195 रन के लक्ष्य का पीछा करना था, मैं शून्य पर पगबाधा हो गया और हम करीब भी नहीं पहुंचे। इसके बाद टीम, सपोर्ट स्टाफ और प्रबंधन होटल की सबसे ऊपरी मंज़िल के बार में थे। (शेन) वॉर्न के साथ वहां लिज हर्ली भी थीं। रॉयल्स के एक मालिक ने मुझसे कहा, रॉस, हमने तुम्हें 10 लाख डॉलर इसलिये नहीं दिये हैं कि तुम शून्य रन बनाओ और यह कहकर उन्होंने मेरे चेहरे पर तीन-चार चांटे मारे।''

उन्होंने कहा, ''वह हंस रहे थे, और चांटे भी तेज़ नहीं थे मगर मुझे यकीन नहीं है कि यह पूरी तरह से नाटक-अभिनय था। मैं उन परिस्थितियों में बखेडा खडा करने नहीं जा रहा था, लेकिन मैं कल्पना नहीं कर सकता था कि यह सब पेशेवर खेल वातावरण में हो रहा है।''

आईपीएल के पहले तीन सीज़न रॉयल चैंलेंजर बैंगलोर में गुज़ारने के बाद टेलर को राजस्थान ने 10 लाख डॉलर में टीम में शामिल कर लिया था। टेलर ने कहा कि 10 लाख डॉलर में बिकना शानदार था, लेकिन वह चौथी बार भी बैंगलोर में रहना पसंद करते।

टेलर ने अपनी किताब में लिखा, ''आईपीएल हालांकि काफी असंवेदनशील है, लंबे समय तक एक टीम में रहने वाले खिलाडियों के प्रति टीम वफादार रहती हैं, और शायद एक फ्रेंचाइजी में रहने से मेरा आईपीएल करियर लंबा होता। दूसरी ओर, अगर मैं आरसीबी में रहता तो मैं वीरेंद्र सहवाग, शेन वार्न, महेला जयवर्धने और युवराज सिंह जैसे महान खिलाडियों के साथ नहीं खेल पाता।''

एआईएफएफ मतदाता सूचीः 1970 और 1980 के दशक के दिग्गजों की फिर होगी फुटबॉल में भूमिका

नयी दिल्ली, 14 अगस्त। भारतीय क्लब फुटबॉल में 1970 और 1980 के दशक में अपने कौशल से सभी को मंत्रमुग्ध करने वाले शब्बीर अली, मनोरंजन भट्टाचार्य जैसे पूर्व राष्ट्रीय कप्तानों की आगामी दिनों में भारतीय फुटबॉल में बडी भूमिका हो सकती है।

एक दशक से अधिक समय तक 'वन मैन शो' (सिर्फ एक व्यक्ति के इशारे पर चलने वाला) रहे भारतीय फुटबॉल किस राह जाएगी इसमें इनके विवेक की अहम भूमिका रहेगी।

इन दोनों के अलावा 34 अन्य अपने जमाने के जाने माने अंतरराष्ट्रीय खिलाडी अब उस मतदाता सूची का हिस्सा हैं जो अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) की अगली आम सभा का चयन करेंगे जबकि इस बीच खेल की वैश्विक संचालन संस्था फीफा के प्रतिबंध की आशंका भी बढ़ रही है।

उच्चतम न्यायालय के आदेश पर 28 अगस्त को होने वाले चुनावों की शुरुआती 67 सदस्यीय मतदाता सूची में भारत के 24 पुरुष और 12 महिला पूर्व खिलाड़ियोंको शामिल किया गया है।

इस सूची में बाईचुंग भूटिया, आईएम विजयन, मॉरीसिया अल्फोंसो, क्लाइमेक्स लॉरेंस, प्रसून बनर्जी, विश्वजीत भट्टाचार्य, ब्रूनो कोटिन्हो, ओइनम बेमबेम देवी जैसे पूर्व भारतीय कप्तान शामिल हैं। नियमों के अनुसार 'प्रतिष्ठित खिलाडी' ने भारत के लिए कम से कम दो मैच खेले हों और चुनाव की तारीख से कम से कम दो साल पहले संन्यास ले लिया हो। मतदाता सूची के प्रकाशन के साथ एक बडा राजनेता एआईएफएफ अध्यक्ष पद की दौड से बाहर हो गया है। अध्यक्ष पद के लिए पूर्व खेल मंत्री और मौजूदा केंद्रीय मंत्री सरवानंद सोनोवाल का नाम सामने आ रहा था। भारतीय जनता पार्टी के विधायक और असम फुटबॉल संघ के अध्यक्ष नाबा कुमार डोले और फुटबॉल दिल्ली के प्रमुख शाजी प्रभाकरन का नाम भी मतदाता सूची में शामिल है। कोई भी व्यक्ति जो निर्वाचक मंडल का सदस्य और भारतीय नागरिक है वह एआईएफएफ अध्यक्ष पद के लिए चुनौती पेश कर सकता है। एआईएफएफ के ये चुनाव फीफा की भारत पर प्रतिबंध लगाने और 'तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप' के कारण अंडर-17 महिला विश्व कप की मेजबानी का अधिकार को छीनने की धमकी के बीच हो रहे हैं। फीफा ने भी 36 खिलाड़ियों को मतदाता सूची में शामिल करने पर नाखुशी व्यक्त की है जो राज्य संघों के प्रतिनिधियों की संख्या के समान है। वैश्विक संस्था ने इस कदम को 'अविवेकपूर्ण' करार दिया है। हालांकि देश में फुटबॉल का संचालन कर रही तीन सदस्यीय प्रशासकों की समिति (सीओए) चुनाव को लेकर आगे बढ़ रही है। इसने एक निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया है जिसने मतदाता सूची तैयार की है। उम्मीदवार निर्वाचन अधिकारी को 17 से 19 अगस्त तक नामांकन पत्र व्यक्तिगत रूप से या डाक से पहुंचा सकते हैं।

एआईएफएफ चुनाव के लिये निर्वाचक मंडल में पूर्व खिलाड़ियों को शामिल किया गया

नयी दिल्ली, 14 अगस्त। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने बाईचुंग भूटिया और आईएम विजयन सहित 36 'प्रतिष्ठित' खिलाड़ियोंको 28 अगस्त को होने वाले आम सभा चुनावों के लिये निर्वाचक मंडल की मतदाताओं की सूची में शामिल किया।

खिलाड़ियोंकी इस सूची में शब्बीर अली, क्लाइमेक्स लॉरेंस, रेनेडी सिंह और जो पॉल अंचेरी भी शामिल हैं। इनके अलावा 12 महिला खिलाड़ियोंका प्रतिनिधित्व भी है जिसमें बेमबेम देवी शामिल हैं। एआईएफएफ ने एक बयान में कहा, ''उच्चतम न्यायालय के तीन अगस्त के आदेश के अनुसार निर्वाचन अधिकारी उमेश सिन्हा ने जांच करने के बाद निर्वाचक मंडल के लिये मतदाताओं की अंतिम सूची (राज्य संघों और प्रतिष्ठि खिलाड़ियोंवाली) तैयार कर ली है।''

इसके अनुसार, ''निर्वाचक मंडल पर अगर कोई आपत्ति होती है तो निर्वाचन अधिकारी 14 अगस्त 2022 को इन्हें देखेंगे और 16 अगस्त 2022 सुबह 10 बजे तक इस पर फैसला कर लेंगे।'' शुक्रवार को पूर्व और मौजूदा भारतीय फुटबॉलरों ने उच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद एआईएफएफ चुनावों में पूर्व खिलाड़ियोंको मतदान का अधिकार देने के फैसले का स्वागत किया था, हालांकि राज्य संघ इससे खुश नहीं थे।

जयपुर में रविवार को एक ही दिन में पौने तीन सौ नए करोना संक्रमित मिले

हालांकि, राज्य में पिछले चौबीस घंटों में 882 नए मरीज पाए गए हैं

- जयपुर और अलवर के बाद अब भरतपुर में भी सौ से अधिक नए संक्रमित मिले हैं।
- राज्य में फिलहाल पांच हजार से ज्यादा संक्रमितों का इलाज चल रहा है।

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 14 अगस्त। राजधानी जयपुर में करोना संक्रमण के मामलों में भारी वृद्धि हुई है। रविवार को यहां एक ही दिन में पौने तीन सौ के करीब नए संक्रमित मिले हैं। वहीं राज्यभर में 882 नए मरीज पाए गए हैं। इस बीच रिकवरी कम होने से एक्टिव केस बढ़कर पांच हजार के पार हो गए हैं।

प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में 26 जिलों में 882 नए करोना संक्रमित मिले हैं। इससे पहले शनिवार को 537 रोगी पाए गए थे। इधर जयपुर में करोना का कहर बढ़ता ही जा रहा है। इसके चलते यहां कई इलाकों में बड़ी संख्या में नए संक्रमित मिल रहे हैं। रविवार को जिले में 273 नए मरीज सामने आए हैं। इसके अलावा अलवर में 108, भरतपुर में 101, उदयपुर में 64, अजमेर में 46, चित्तौड़गढ़ में 45, डूंगरपुर व नागौर में 34-34, कोटा में 27, पाली में 26, दौसा में 20, जोधपुर में 19, सिरोही में 16, बीकानेर में 13, जैसलमेर में 10, भीलवाड़ा व सीकर में 9-9, प्रतापगढ़ में 7, सवाई माधोपुर में 6, धौलपुर में 4, हनुमानगढ़ व झालावाड़ में 3-3, बारां में 2 तथा बांसवाड़ा, गंगानगर और करौली में 1-1 नया संक्रमित मिला है।

प्रदेश में रविवार को फिर रिकवरी में कमी आई है। इस दौरान केवल 145 मरीज ही ठीक होने से एक्टिव केस बढ़कर 5036 हो गए हैं। इनमें सबसे ज्यादा 1615 मामले जयपुर में है। इसके अलावा अलवर में 836, उदयपुर में 552, भरतपुर में 314 और चित्तौड़गढ़ में 247 लोगों का इलाज चल रहा है। राज्य में पिछले चौबीस घंटों में करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। प्रदेश में अब तक इस बीमारी से 9593 लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

राजधानी जयपुर में रविवार को 46 स्थानों पर नए संक्रमित मिले हैं। इनमें सबसे ज्यादा 47 मरीज सांगानेर इलाके में मिले हैं। इसके अलवा जगतपुरा में 32, मालवीय नगर व यूटी में 30-30, मानसरोवर में 21, वैशाली नगर में 10, सी-स्कीम में 9, गोपालपुरा, जवाहर नगर व सोड़ाला में 7-7, बगरू में 5, अजमेर रोड, दुर्गापुरा, झोटवाड़ा व कोटपूतली में 4-4, आदर्श नगर, चांदपोल व फागी में 3-3, बनीपार्क, दूदू, झालाना डूंगरी व शास्त्री नगर में 2-2 तथा आगरा रोड, अम्बावाड़ी, आमेर, बजाज नगर, ब्रह्मपुरी, चाकसू, चौड़ा रास्ता, सिविल लाइंस, गलता गेट, गांधी नगर, गोविंदगढ़, गोविंद नगर, जौहरी बाजार, खातीपुरा, लालकोठी, महेश नगर, मुरलीपुरा, निर्माण नगर, प्रताप नगर, राजापार्क, सरदार पटेल मार्ग, सिरसी और विद्याधर नगर में 1-1 नया संक्रमित मिला है। वहीं 12 मरीजों का पता गलत मिला है। जिले आज केवल 35 संक्रमित ही ठीक हुए हैं।

कर्नाटक में नेतृत्व बदलने का रिस्क नहीं लेना चाहती भाजपा!

बैंगलुरु, 14 अगस्त। कर्नाटक में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा नेतृत्व जल्दी ही राज्य में जरूरी बदलाव कर सकता है। पार्टी के नेता लगातार राज्य के दौरे कर जमीनी स्थिति का जायजा ले रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के नेतृत्व में ही पार्टी चुनाव में जाएगी, लेकिन संगठन स्तर पर रणनीतिक बदलाव किए जाने की संभावना है।

दक्षिण भारत में कर्नाटक ही एकमात्र ऐसा राज्य है, जहां भाजपा सत्ता में है। पिछले कई साल से पार्टी कर्नाटक के बाहर अन्य राज्यों में सत्ता तक अपना विस्तार नहीं कर पाई है। ऐसे में पार्टी के लिए कर्नाटक के दुर्ग को बनाए रखना बेहद जरूरी है, ताकि दक्षिण भारत में उसकी उपस्थिति रह सके। हालांकि, इस बीच पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदुरप्पा के पद से हटने के बाद पार्टी की पकड़ कमजोर होती दिख रही है।

ईज़िप्ट में चर्च में आग लगने के बाद भगदड़ मचने से 41 लोगों की मौत

चर्च में आग लगने की घटना के वक्त 5 हजार लोग मौजूद थे

- चर्च की इमारत पुरानी होने के कारण आग काफी तेजी से फैल गई। आग लगने पर चर्च के लोग भागने लगे और इससे भगदड़ मच गई। नतीजन, कई लोगों की दम घुटने से मौत हो गई।
- मरने वालों में अधिकतर बच्चे व महिलाएं हैं, कई पादरियों की भी मौत हुई है।

काहिरा, 14 अगस्त। ईजिप्ट (मिस्र) के गीजा में एक चर्च में लगी आग के बाद हुई भगदड़ के चलते 41 लोगों की मौत हो गई है। चर्च में प्रार्थना करने के लिए 5,000 लोग जुटे थे। घटना मिस्र की राजधानी काहिरा के गीजा की है। जानकारी के मुताबिक बच्चों, चर्च के पादरियों और नागरिकों की मौत हो गई है। घटना में घायलों की संख्या का अभी तक खुलासा नहीं हो पाया है। आग लगने से चर्च को बड़ा नुकसान हुआ है।

हालांकि अभी चर्च में आग लगने के वजहों की सटीक जानकारी सामने नहीं आई है। लेकिन अनुमान लगाया जा रहा है घटना के पीछे शॉर्ट सर्किट वजह हो सकती है। चर्च की इमारत पुरानी होने के कारण आग काफी तेजी से फैल गई। आग लगने पर चर्च के लोग भागने लगे और इससे भगदड़ मच गई। नतीजतन, कई लोगों की दम घुटने से मौत हो गई।

यह घटना रविवार सुबह की है। मरने वालों में बच्चों की संख्या ज्यादा होने की आशंका है। असल में इस चर्च में नर्सरी भी चलती थी। हालांकि कितने बच्चे आग की चपेट में आए हैं, इसकी पुष्ट जानकारी नहीं मिल सकी है। आग की सूचना मिलने के बाद दमकल की 15 गाड़ियों को मौके पर भेजा गया और आग पर काबू पाने का प्रयास किया गया। घायलों और मृतकों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मिस्र के स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि 55 लोग घायल हुए हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता होसम अब्देल गफ्फार ने इस बारे में जानकारी दी।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:**-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908